not only spend more if necs^ry, but he would also ask for more and spend more, if necessary. But to take his statement and present it in a perspective which is not correct, would rather be doing some sort of injustice to Dr. Ramanna.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The statement on Punjab is bejag made just now. This discussion will continue after-•wards; if Members agree, today in the evening; or tomorrow if they think we can take it up tomorrow as the Calling Attention continues. Special Mentions will also be taken up later on after that. The Finance Minister was to make two statements. As you know, the Lok Sabha has been adjourned. So he will make these two statements tomorrow. The statement regarding Punjab will be made just now. And, immediately it will be followed by a discussion, party-wise.

**श्री शिव चन्द्र झा** (बिहार) : मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है। यह स्टेटमेंट सूओ मोटो देने जा रहे हैं और इस पर क्लैरिफिकेशन की परम्परा रही है और इस को आप डिस्कशन में बदल रहे हैं। ठीक है, आप को इस का अधिकार है और हाउस भी चाहता है। पंजाब का मामला एक गंभीर मामला है। लेकिन आप जानते हैं कि जब भी यह स्टेटमेंट देंगे उस पर मांग होगी डिस्कशन के लिए और हर बार यह परिस्थिति आयेगी। ऐसी हालत में या तो आप को चाहिए था कि जो कालिंग अटेंशन आप ने आज शुरू किया उस को पोस्टपोन करा देते, कल शुरू में यह लिया जाता और नहीं तो जो परंपरा रही है कि जब कालिंग अटेंशन शुरू हो जाता है उस को खत्म करा दीजिए और उस के बाद यह डिस्कशन लिया जाय भले ही इस के लिए हमको रात को 12 बजे तक हाउस को चलाना पड़े। ऐसा पहले हुआ है। जब यहां पंजाब पर डिस्कशन होने जा रहा है तो मैं जानना चाहता हूं कि क्या आप ने इस को पहले से विजुवालाइज नहीं किया था कि पंजाब का मामला जब आयेगा तो वह लम्बे समय तक चलेगा और अच्छा होता कि आप कालिंग अटेंशन को ही पोस्टपोन करा देते। नहीं तो कालिंग अटेंशन को डिस्कशन के बाद आप खत्म कराइये क्योंकि आज तक यही परम्परा रही है, चाहे रात के दस बज जायें।

**श्री उपसभापति** : ठीक है, यह उस समय देखा जाएगा क्या स्थिति है।

**STATEMENT BY MINISTER**
**Statement in Punjab**

THE MINISTER OF HOME AFFAIR ((SHRI P. C. SETHI): Sir, : the Hon'ble Members are aware, 1 ii formed the House during the last s^ssic that it is the Government's endeavour find a peaceful solution to the problen in Pimjab. Hon'ble Members had ai' expressed the view that negotiations wi' the. Shiromani Aka'.i Dal leadership shou be resumed in respect of ';he sharing < waters of Ravi-Beas and the territori disputes between Punjab and Haryan In pursuance of this, I invited the Aka Dal leaders to resume discussions, but, u fortunately, they have not respond! favourably to my invitation. I take ti opportunity to p!ace on the Table of tl House copies of the correspondence e: changed between me and the President 1 the ""i^. Dal since 30th May, 198 [Placed in Library. *See* No. LT-6703/83 Having failed to get a favourable respons as the Hon'ble Members are aware, issued a Press statement on Punjab ( 22nd June, 1983. Despite GovernmeJii clear offer to refer the two pending issu to tribunals, the Shiromani Akali D leaders have not reacted in a positr manner so far.

Our appeal to reconsider the call f 'Rail Roko' programe on 17th Jul 1983, was not heeded. Keeping in vi< the need for safety and security of t passengers and public property and t large scale violence by Akali work«

[Shri P, C. Sethi]

during the -Ras'a-Roko' agitation, the Government decided to suspend rail traffic and State Iransport in Punjab. Dsspite the fact that Shiromani Akali Dal leadership called off the 'Rail Roko' agitation, agitators indu'ged in disruptive activilies including squatting on railway tracks, cutting of signaIs|telephoneitelegraph wires removal of fish plates obstruc'ion of - railway tracks by placing wooden logs and flooding of railway track by cutting the canal bank. This caused loss of public property and inconvenience to the travelling public.

Hon'ble Members had earlier expressed their concern about using places of worship as .sanctuaries for criminals and anti-national elements. Government expected the Shiromani Akali Dal to assure Ihe nation that it would not permit the holy shrines to be used for the storage of arms o"" ft"' harbouring wanted persons. It was suggested that a live member com-mif.ee of sikhs may be set up jointly by the State Government and Shiromani Akali Dal 10 screen the persons now living within the premises of holy shrines. It is unfortunate that the Shiromani Akali Dal leadership is .not prepared to discuss the question of misuse of holy shrines.

Hon'ble Members had expressed their concern about violent and terrorist activi-".ies. Government has repeatedly appealed to the leadership of Shiromani Akali Dal to unequivocally condemn violent activities and not to say or do anything which may aggrevate the situa'Mon. But unfortunately there have still bean provocative and threatening speeches by some of the leaders. We have to be careful chat continuing agitation does not spark of incidents of a communal nature.

Government has put forth proposals to resolve various issues as also fo preserve 'he sanctity of holy shflncs and to maintain amity iimonc all sections of society. Hon'ble Members will agree with me that Government cannot countenance utterances cf activi'iss which tend to undermine the unity and integrity of the country.

I reiterate my appeal to the Shiromani Akali Dal and the S.G.P.C. leadership to respond '".o- the proposals put forth by the Government in the proper spirit and give up the path of confrontation for the good of the people and in the interest of '.he State and the nation. I trust that in ^his, I echo the feelings of every section of the House.

**श्री सुरेन्द्र मोहन** (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, मैं यह उम्मीद करता था कि जब माननीय गृह मंत्री जी यह बयान पढ़ रही हैं तो वह कुछ ऐसी बातें कहेंगे जिनसे कि पंजाब के तनाव को कम करने में सहायता मिलेगी। लेकिन मुझे यह कहते हुए अफसोस होता है कि उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं कही जिससे कि चाहे राजनीतिक मतभेद जो भी हों, उन राजनीतिक मतभेदों के बीच भी पंजाब में शांति स्थापित हो सके और पंजाब में विभिन्न समुदायों में एकता का वातावरण, अच्छाई का वातावरण सहनशीलता का वातावरण बन सके। गृह मंत्री जी के बयान में सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि उन्होंने शिरोमणी अकाली दल के सम्बन्ध में कुछ इल्जाम लगाये हैं, उनमें से अक्सर गलत इल्जाम हैं। मुझ को इस बात का ताज्जुब है कि गृह मंत्री जी ने उन लोगों का बिल्कुल जिक्र नहीं किया है जिनके बयानों से पंजाब में अक्सर परेशानी पैदा हो रही है। यह सब जानते हैं कि संत भिंडरवाला शिरोमणी अकाली दल के सदस्य नहीं हैं। सब जानते हैं कि उनका इस दल का नेता होने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। यह सब जानते हैं कि संत भिंडरवाला के कारनामों से शिरोमणी अकाली दल ने अपने आप को बराबर अलग रखा है। उन्होंने कहा है कि इनके साथ हमारा ताल्लुक नहीं है। सब जानते हैं कि संत भिंडरवाला पंजाब की फिजा खराब कर रहे हैं। गृह मंत्री जी ने उनके सम्बन्ध में एक शब्द भी इस बयान में नहीं कहा है। पंजाब

में एक्स्ट्रीमिस्ट हैं--पंजाब में एक्स्ट्रीमिस्ट संत भिंडरवाला नहीं हैं तो क्या संत लोंगोवाल एक्स्ट्रीमिस्ट हैं ? अगर आपका बयान संत लौंगोवाल के सम्बन्ध में है तो यह जरूर समझ लिया जायेगा कि आप अमन पसन्दों के खिलाफ लड़ना चाहते हैं लेकिन जो इन्तहा पसन्द है उनके खिलाफ लड़ना नहीं चाहते । उनके साथ आपकी क्या दोस्ती है, उनके साथ आपकी क्या अंडरस्टेंडिंग है यह आप जानें। लेकिन सारा पंजाब यह जानता है संत भिंडरवाला को पैदा किया तो किसने पैदा किया । सारा पंजाब जानता है, सारा देश जानता है, इन्ताह पसन्दों के पीछे आपकी सरकार का हाथ है । इन्ताह पसन्दों के पीछे अकाली दल के लोगों का हाथ नहीं है । सब जानते हैं कि दल खालसा किसने पैदा किया । आप मेहरबानी करके याद कीजिए । 1979 का इलेक्शन गुरुद्वारे का इलेक्शन । दल खालसा के लोगों ने चुनाव लड़ा । खालिस्तान के मैनीफेस्टो पर चुनाव लड़ा । 140 सीटों पर जो उम्मीदवार खड़े किये उनके मुकाबले में शिरोमणी अकाली दल ने भी अपने उम्मीदवार खड़े किये । खालिस्तान की मांग के खिलाफ शिरोमणी अकाली दल ने चुनाव लड़ा । दल खालसा के लोग हारे । दल खालसा के उम्मीदवारों की आपकी पार्टी ने बराबर मदद दी । आपकी पार्टी ने खुलकर उनकी इमदाद की । वह हार गये और आप भी हार गये । इसके पीछे और कुछ नहीं था । कौन इन्ताह पसन्द हैं, कौन कनफ्रन्ट्रेशन की बात कर रहा है, जिसके कन्फ्रण्टेशन का रास्ता अपनाया है ? आप उनके सम्बन्ध में कह रहे हैं जो पंजाब में बराबर इस बात का एलान किया करते हैं कि हम शान्ति का म रखना चाहते हैं । शिरोमणी अकाली दल ने एक बार नहीं, कई बार एलान किया है कि हमारा पंजाब में किसी भी तरह से सैपरेटीज्म पैदा करने का इरादा नहीं है । उन्होंने हिन्दुस्तान के लिए अपनी वफादारी का ऐलान किया । उसको ताकत देने की बात कही । उन्होंने बराबर यह कहा कि हम किसी भी हालत में वायलेंस को पसन्द नहीं करते । आपने कुछ बयान संत लोंगोवाल के और कुछ बयान प्रकाश सिंह बादल के पढ़े होंगे । जत्थेदार उमरा नंगल जी के भी बयान आपने पढ़े होंगे जो इनके बड़े नेता हैं । हर बयान में उन्होंने कहा कि वायलेंस को, हिंसा को हम नामंजूर करते हैं । हम उसकी भर्त्सना करते हैं उसकी निन्दा करते हैं । इस सब के बावजूद आप कहते हैं कि उनका रास्ता कन्फ्रण्टेशन का रास्ता है । मैं गृह मंत्री जी से बहुत अदब से पूछना चाहता हूं कि 22, 23 और 24 जनवरी को उनके साथ बातचीत हो रही थी । बातचीत में काफी दूर तक हर एक समस्या का समाधान निकल रहा था लेकिन उसके बाद 24-25 जनवरी के--बाद आज जुलाई होती है छः महीने हो गये आपने उनके साथ बातचीत करने की कोई कोशिश नहीं की । आप कहते हैं कि आपका पत्र-व्यवहार हो रहा है । दुर्भाग्य से आपका पत्र-व्यवहार मेरे पास नहीं है । इसलिए उस बारे में कुछ नहीं कह सकता । अच्छा होता अपने बयान के साथ उस पत्र-व्यवहार को भी आप हम को दिखा देते ताकि हम कह सकते कि आपके पत्र-व्यवहार में और आपकी बातों में क्या रीजनेबल है कितना सही है कितना सही नहीं है । खैर वह पत्र-व्यवहार हमारे सामने नहीं है । लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूं जनवरी में बातचीत हो गई और आपने यह पोजिशन ले ली कि हम धार्मिक मांगों के सम्बन्ध में कोई फैसला नहीं लेंगे आउटर आल सेटलमेंट होगा तभी पूरा फैसला होगा । धार्मिक मामलों के सम्बन्ध में अकेला फैसला नहीं होगा । अकाली दल कहता है कि धार्मिक मांगों पर फैसला करो । आपने

[श्री सुरेन्द्र मोहन]

इनके ऊपर फैसला नहीं किया। लेकिन आपने इसके बाद बातचीत को तोड़ दिया। बातचीत तोड़ने के बाद अपने पक्ष को मजबूत बनाने के लिए किसी पक्ष गुरुद्वारे में जा कर अपने स्पोटर्स को बुला कर मजहबी और धार्मिक मांगों को मानने का एलान किया। अकाली दल के मन में और अकाली दल के जो हिमायती हैं उनके मन में एक शुबहा पैदा कर दिया कि आप अकाली दल के साथ समझौता नहीं करना चाहते। आप केवल बातचीत का नाटक कर रहे हैं। आपका समझौता करने का कोई इरादा नहीं है। आप लोगों में गलतफहमी पैदा करते हैं। एक तरफ तो आप संत भिंडरावाला के सम्बन्ध में एक शब्द भी कहने के लिए तैयार नहीं हैं और दूसरी तरफ आप विरोधी पार्टियों पर इल्जाम लगाते हैं। इन सब बातों का मतलब यह है कि सरकार और सरकारी पार्टी इस सम्बन्ध में एक खास सोच-समझ रखती है। उनकी अपनी एक योजना है और वह योजना यह है कि पंजाब के अन्दर ज्यादा से ज्यादा तनाव पैदा किया जाय, भिंडरावाला को पूरा मौका दिया जाए कि वह हिन्दुओं और सिखों के बीच में ज्यादा से ज्यादा द्वेष पैदा करें। संत लोंगोवाल के खिलाफ इल्जाम लगाये जायें। वे जो बयान देते हैं उनको ध्यान में न रखा जाय और उनके खिलाफ कन्फ्रन्टेशन तैयार किया जाय। आप कभी भी पंजाब में अमन पैदा नहीं करना चाहते हैं। मैं पूछना चाहता हूं क अभी तक पंजाब में जो कत्ल हुए हैं उनमें आपने कितने लोगों को गिरफ्तार किया है? क्या आपने एक भी कत्ल करने वाले को आज तक पकड़ा है? यह सरकार आज क्या कर रही है?

**श्री मौलाना असरारुल हक़** : (राजस्थान) : गिरफ्तार कैसे करें, मुल्जिम तो गुरुद्वारों में छिप जाते हैं।

†[شری (مولانا) اسرار الحق (راجستھان) : گرفتار کیسے کریں ملزم تو گوردواروں میں چھپ جاتے ہیں۔]

**श्री सुरेन्द्र मोहन** : जितने भी कत्ल हुए हैं वे गुरुद्वारों के अन्दर नहीं हुए हैं गुरुद्वारों के बाहर हुए हैं। आपके पास पुलिस है आपके पास इंटेलिजेन्स है, ये सब क्या कर रहे हैं? अगर आप कत्ल करने वालों को, मुल्जिमों को गिरफ्तार नहीं कर सकते हैं सरकार नहीं चला सकते हैं तो आपको इस्तीफा दे देना चाहिए। अगर आप मर्डर्स खत्म नहीं कर सकते हैं गुनाहगारों को गिरफ्तार नहीं कर सकते हैं तो आपको सरकार में रहने का कोई हक नहीं है। आपको मेहरबानी करके इस्तीफा दे देना चाहिए। आप लोगों पर झूठे इल्जाम लगाते हैं। हम आपको यह मौका नहीं देंगे कि आप मुल्क को तोड़ें, हम आपको मौका नहीं देंगे कि आप हिन्दुस्तान के हिन्दुओं और सिखों में नफरत पैदा करें। हम आपको मौका नहीं देंगे कि आप इस तरह से देश में बदअमनी पैदा करें।... (**व्यवधान**)

**श्री सतपाल मित्तल** (पंजाब) : अकाली दल क्या कह रहा है, इसको भी देखिए ... (**व्यवधान**)।

**श्री सुरेन्द्र मोहन** : मैं अकाली दल के सम्बन्ध में पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं।

**श्री सतपाल मित्तल** : आप मुझे एक भी स्टेटमेन्ट ऐसा दिखा दीजिए जिसमें संत लोंगोवाल ने वायलेन्स की मजम्मत की हो एक भी शब्द उन्होंने वायलेन्स के खिलाफ कहा हो।

**श्री सुरेन्द्र मोहन** : उपसभापति जी, मैं अपने मित्र श्री सतपाल मित्तल जी से बड़े अदब के साथ यह गुजारिश करता

†[ ] Transliteration in Arabic script.

श्रीमती इंदिरा गांधी की यह कोशिश नाकामयाब हो जायेगी । ... (**व्यवधान**) चाहता हूं कि मैं अकाली नेताओं के एक नहीं अनेक बयान दिखा सकता हूं जिनमें उन्होंने हिन्दुओं और सिखों को एकता की बात कही है और हिंसा को मजम्मत की है । उन्होंने कहा है कि हिंसा नहीं होनी चाहिए। लेकिन मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि जितने भी कत्ल हुए हैं उनमें अपराधियों को पकड़ा नहीं जा सका है । एक भी मुल्जिम को गिरफ्तार नहीं किया गया है । क्या वजह है कि अब तक जितनी भी बातचीत हुई है, अकालियों के साथ जो बातचीत हुई है उसके सम्बन्ध में वाइट पेपर जारी नहीं किया गया है ? आप आरोप लगाते हैं कि अकाली दल गलत बातें करता है, लेकिन क्या आपने इस सम्बन्ध में स्थिति को स्पष्ट किया है ? मैं यह बड़े अदब के साथ कहना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री जी बार-बार बयान देती जा रही हैं, लेकिन वे पंजाब के मसले को सुलझाने में असफल रही हैं । प्रधान मंत्री जी के बयानों से पंजाब की हालत ज्यादा खराब हुई है .... ( **व्यवधान** )

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि आप हिन्दुओं और सिखों के बीच में गलतफहमी पैदा कर रहे हैं, अकाली दल के सम्बन्ध में गलत फहमी पैदा कर रहे हैं । भिंडरावाला को बेशर्मी के साथ सपोर्ट कर रहे हैं। इसके बावजूद भी पूरा इल्जाम अपोजीशन पर लगाते हैं । प्रधान मंत्री श्रीमती इंदरा गांधी ने बयान दिया कि अपोजीशन देश को तोड़ता है । लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि देश को तोड़ने का काम आप करते हैं और इल्जाम हम पर लगाते हैं ?

SHRIMATI MONIKA DAS (Karnataka): Punjab people are seeing what you are doin gthere. (*Interruptions*) You want to bring down Indira Gandhi's Government. You cannot do anything. (*Interruptions*). You bring some solution. (*Interruptions*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please don't disturb. Allow him to speak.

**श्री सुरेन्द्र मोहन** : मैं बहुत अदब के साथ ...

**श्री सैय्यद सिब्ते रजी** (उत्तर प्रदेश) : आस्तीन चढ़ा कर आप औरतों की तरह लड़ रहे हैं । हमारी तरफ तो औरतें हैं ही ।

**श्री सुरेन्द्र मोहन** : मैं बहुत अदब के साथ यह दरख्वास्त करना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री जी के बयानों से पंजाब में, जम्मू-काश्मीर में और अन्य जगहों पर एक फिजा पैदा हो रही है जो कि आपस में मिल-जुल कर रहने की, अमन की, प्यार की फिजा नहीं है । मैं यह कहना चाहता हूं कि इसके पीछे एक योजना है ... (**व्यवधान**) ...

**श्री (मौलाना) असरारुल हक** : आप अमेरिका को सपोर्ट कर रहे हैं ... (**व्यवधान**) ...

†[شری ( مولانا ) اسرار الحق :
آپ امریکہ کو سپورٹ کر رہے ہیں -]

**श्री सुरेन्द्र मोहन** : उनकी योजना है कि आपस में, देश के लोगों के अन्दर इतनी गहरी नफरत पैदा हो जाएं, इतनी ज्यादा फूट पैदा हो जाये जिससे लोगों में असुरक्षा की भावना पैदा हो और जितनी असुरक्षा की भावना पैदा हो और जितनी असुरक्षा की भावना पैदा होगी उससे हिन्दुस्तान की जनता, भोली-भाली जनता यह समझेगी कि देश के लिए डिक्टेटरशिप चाहिए और इसके लिए श्रीमती इंदिरा गांधी कोशिश कर रही हैं । लेकिन मैं आप से यह कहना चाहता हूं कि उनकी यह कोशिश कामयाब नहीं हो सकती, क्योंकि हिन्दुस्तान की जनता सबसे ज्यादा अमन को प्यार करती है । देश की एकता को प्यार करती है । हिन्दुस्तान की जनता देश-भक्त जनता है और इसलिए

†[ ] Transliteration in Arabic script.

**श्री उपसभापति** : आप बीच में मत बोलिए। जरा सुनिए, . . . (**व्यवधान**) . .

**श्री सुरेन्द्र मोहन** : मैं आपसे फिर यह अर्ज करना चाहता हूं कि जब तक कांग्रेस पार्टी के लोग, जब तक सरकार के लोग बजाय इसके कि अपोजीशन को गालियां दें, अपोजीशन के ऊपर इल्जाम लगायें, अपोजीशन को साथ लेकर नहीं चलते तब तक यह समस्या हल नहीं हो सकती । जब तक वे संत भिंडरावाला को सपोर्ट करना बन्द नहीं करते तब तक पंजाब का कोई हल नहीं हो सकता । मैं यह भी कहना चाहता हूं कि . . . (**व्यवधान**) . . जिन्होंने दल खालसा को पैदा किया जब तक वे उनको सपोर्ट करना बन्द नहीं करेंगे तब तक पंजाब में शांति नहीं हो सकती । इसलिए मैं मांग करता हूं कि जल्दी से जल्दी आपको ह्वाइट पेपर पब्लिश करना चाहिए। हमने पिछली बार भी मांग की थी कि ह्वाइट पेपर पब्लिश करें । क्यों नहीं आपने किया यह मैं जानना चाहता हूं ? इसका कारण यह है कि क्योंकि इन बातों का आप कोई जवाब नहीं दे सकते हैं। प्रधान मंत्री क्यों हम लोगों पर इल्जाम-तराशी करती हैं । जब भी प्रधान मंत्री ने देश के अपोजीशन पार्टीज के लीडर्स को बातचीत करने के लिये बुलाया चाहे अलग से बुलाया या मीटिंग में बुलाया किसी ने भी जाने से इंकार नहीं किया । सब ने बातचीत की । इसके बावजूद बातचीत भी करती हैं और इल्जाम भी लगाती हैं । लेकिन अब यह चालाकी नहीं चलेगी, यह दो मुंही नीति अब नहीं चलेगी । मैं आपको बताना चाहता हूं कि अगर आप ने यह फैसला कर लिया है और अगर आप यह सोचते हैं कि अपोजीशन इस देश को तोड़ना चाहता है तो उनके साथ आप बात क्यों करते हैं । अगर बात करते हैं विश्वास के साथ बात करते हों तो उसका कोई रास्ता निकालें और यह इल्जाम-तराशी करना बन्द करो । यह सस्ती राजनीति नहीं चल सकती । धन्यवाद ।

**श्री सत पाल मित्तल** : उपसभापति जी, मेरे परम मित्र सुरेन्द्र मोहन जी ने इल्जामात की एक लम्बी फेहरिस्त हाउस के सामने पेश कर दी है । मैं उनको याद दिलाना चाहता हूं कि 1971 में डा० जगजीत सिंह कौन थे जब वे हिन्दुस्तान छोड़ कर गये उस वक्त उनका अकाली दल में क्या स्थान था . . . (**व्यवधान**) . . . आप बीच में न बोलिए अन्यथा मैं भी किसी को बोलने नहीं दूंगा ।

डिप्टी चेयरमैन साहब, इस वक्त (**व्यवधान**) मुझे अपनी पार्टी के मेम्बर साथियों को डील करना मुश्किल है, उनको डील मैं कर लूंगा । डिप्टी चेयर-मैन साहब, मैं सुरेन्द्र मोहन जी को याद दिलाना चाहता हूं कि जब जगजीत सिंह 1971 में हिन्दुस्तान छोड़ कर गये थे तो वह सो काल्ड आल इण्डिया अकाली दल के जनरल सेक्रेटरी थे । चार साल मुत-वातिर अखबार लिखते रहे, हिन्दुस्तान की सब पोलिटिकल पार्टियां इस बात की मज्जमत करती रहीं । एक बार भी अकाली दल के किसी प्रधान ने डिस-ओन नहीं किया है और जब लौट कर आए हिन्दुस्तान में तो उनका इस्तकबाल किया गया जैसे किसी हीरो का होता है न सिर्फ बाहर बल्कि गुरुद्वारों के बीच में और अकाली दल की जो मौजूदा लीडरशिप है इनकी इस्तकबाल कमेटियां थीं । कौन था जगजीत सिंह ? जिस ने बाहर जा कर यह कहा कि पाकि-स्तान जो है वह हमारे गुरुद्वारों की रखवाली ठीक तरह से कर रहा है, पाकिस्तान जो है वह वेटीकन का स्टेटस देने के लिए तैयार है । वहां जा कर के किस से सम्बन्ध स्थापित किया ? वहां जा कर लन्दन में बूटा बेग के साथ सम्बन्ध स्थापित किया ।

स्टेट्समैन की इसी महीने की बीस-इक्कीस तारीख की रिपोर्ट है । उनकी जो टीम है उसकी इनवेस्टीगेटिव रिपोर्ट छपी हुई है जिसके अन्दर एक वाकया नहीं 20 वाकयात दिये हैं कि किस तरीके से पी० आई० ए० चार्टर कर के लन्दन से जाते रहे हैं, पाकिस्तान किस तरीके से डा० जगजीत सिंह के लिए हजारों डालर खर्च कर के अमरीका में स्वागत करवाए गये हैं, किस तरीके से फेसिलिटीज प्रोवाइड कर के यूनाइटेड नेशंस में चार्टर दिलवाए गये हैं यह सरकार का कच्चा चिट्ठा जो है इनके पाकिस्तान और अमरीका के साथ कनेक्शन रहे हैं (**व्यवधान**) डिप्टी चेयरमैन साहब, सिर्फ समस्या कोई नहीं है । न तो चण्डीगढ़ की समस्या है, न पानी की समस्या है, न टेरीटरी की समस्या है, एक ही समस्या है कि जब अकाली दल ताकत से बाहर हो जाता है तो यह सब चीजें खड़ी हो जाती हैं, जब वह ताकत में होते हैं, जब इनके साथी सुरेन्द्र मोहन जी के साथ थे, जब मोरारजी भाई की केबीनेट में इनके दो मंत्री थे, उस वक्त न कोई चण्डीगढ़ की प्रोब्लम थी, उस वक्त फाजिल्का अबोहर किसी को याद नहीं था, उस वक्त पानी का बंटवारा ठीक था, उस वक्त सब कुछ ठीक था । अकाली दल के दो मन्त्री यहां पर बैठे थे, जब अकाली दल का पंजाब में राज था जिसमें भारतीय जनता पार्टी के लोग भी थे उस वक्त सब ठीक था क्योंकि ताकत उनके हाथ में थी । उस वक्त न आनन्दपुर साहब का रेजोल्यूशन था और न कोई पोलिटिकल बात थी । जब 1980 में इलेक्टोरेट ने ताकत से इनको बाहर निकाल दिया, कांग्रेस को ताकत दे दी उस वक्त इनको आनन्दपुर साहब का रेजोल्यूशन भी याद आ गया, चण्डीगढ़ भी याद आ गया, फ़ाजिल्का और अबोहर भी याद आ गया, पानी भी याद आ गया । मैंने कहा था, सब कहते हैं कि सांप का काटा हुआ हो तो उसका इलाज है लेकिन अगर किसी को कुर्सी काट जाए तो उसका इलाज लुकमान हकीम के पास भी नहीं है । यह अकाली दल कुर्सी का काटा हुआ है (**व्यवधान**) अब यह प्राइम मिनिस्टर को एब्युज कर रहे हैं । मैं पूछना चाहता हूं कि पिछले 11 साल के आप आंकड़े ले लीजिए जितना आप्टीमम पानी यूज हुआ है पंजाब में जितना सब से ज्यादा पानी यूज हुआ है, क्या आज जो पानी पंजाब को दिया गया है वह उस पानी से ज्यादा है या नहीं? अगर इसका जवाब पोजिटिव है तो फिर पानी का बंटवारा करते हुए यह ध्यान क्यों नहीं रखा जाता कि हरियाणा भी हिन्दुस्तान का हिस्सा है पाकिस्तान में पानी चला जाए; मुतवातिर सालों-साल जाता रहे उसमें इन को कोई तकलीफ नहीं । उस पानी का एक हिस्सा अगर हरियाणा इस्तेमाल कर ले, उस पानी का एक हिस्सा अगर राजस्थान इस्तेमाल कर ले उससे देश की बंजर जमीन सरसब्ज और आबाद हो जाये, उस में फसल हो जाए तो इसमें इनको तकलीफ है । पाकिस्तान को जाता रहे इसमें कोई तकलीफ नहीं है । मैं निहायत अदब के साथ अर्ज करता हूं अकाली दल जो लड़ाई लड़ रहा है वह कुर्सी की लड़ाई है वह ताकत की लड़ाई है । वह किसी किस्म का चेहरा लगा कर आ जाएं एक्स्ट्रिमिस्ट का चेहरा हो या किसी अपोजीशन का चेहरा हो चाहे वह भिंडरावाला का चेहरा हो (**व्यवधान**) मैं कह रहा हूं आप सुनिये । मैं कहना चाहता हूं डिप्टी चेयरमैन साहब, मैं सुरेन्द्र मोहन जी से पूछना चाहता हूं इन्होंने कहा है कि भिंडरावाला का अकाली दल के साथ कोई ताल्लुक नहीं है । मैं मंत्री साहब पर की हुई तकरीरें बता दूं जो अकाली दल के नेताओं के साथ एक ही दीवान में खड़े हो करते हैं क्या आप इन्कार कर सकते हैं, क्या आप संत लौंगोवाल का यह बयान झुठला सकते हैं

[श्री सत्पाल मित्तल]

जिसमें उन्होंने कहा कि भिंडरावाला का आशीर्वाद हमारे साथ है। आप कहते हैं अकाली दल का उनके साथ कोई ताल्लुक नहीं है। गोलियां चलती हैं, बातें कर रहे हैं आल इंडिया गुरुद्वारा एक्ट की।

डिप्टी चेयरमैन साहब, प्रधान मंत्री जी ने और सरकार ने यह कहा कि हम दूसरी स्टेटों से पूछ रहे हैं। दूसरी स्टेटों से पूछे बिना, दूसरी स्टेटों के गुरुद्वारों से पूछे बिना यह कहां से सारा का सारा फैसला हो सकता है। अगर प्रधान मंत्री जी देहरादून से बयान दे कर कह सकती हैं कि किसी और स्टेट की टेरीटरी का, पानी पर क्लेम होगा तो उसको भी मुझे इक्जामिन करना है, क्योंकि मैं हिन्दुस्तान की प्रधान मंत्री हूं, मुझे सब स्टेटों को देखना है तो आपोजीशन को क्यों तकलीफ होती है। आपोजीशन ने जब देखा कि सारे देश में राय आम उनके खिलाफ हो रही है तो अडवाणी जी खड़े हुए, इन्होंने कहा नहीं भाई एक कौम है, एक नेशन है, इसलिए यह बात जो हो रही है, गलत हो रही है। आज तक तो किसी आपोजीशन के लीडर ने अगर जा कर कुछ किया है तो तेल ही डाला है कड़ाही में और शांति की बात नहीं की। पठानकोट से वाजपेयी साहब की तकरीर ले लीजिए या जितने नेता जा कर सरोपा ले कर आये हैं, मिल कर आये हैं, इन्होंने कोई बात ऐसी नहीं की है कि जिससे पंजाब में शांति हो। मैं निहायत अदब से आपसे कहना चाहता हूं कि भिंडरावाला का नाम ले कर हमें कोसने वाले समझ लें कि चाहे उनके कई रूप हों, एक किस्म के हों या दूसरे किस्म के मैं कहे देता हूं कि सब से पहले पंजाब का कमीशन बना था उसकी जो रिपोर्ट आई थी उसको भी अकाली दल ने स्वीकार नहीं किया। एजीटेशन खड़ी की, फिर से एक फैसला आया और यह वही फैसला है जिसको इम्प्लीमेंट करने के लिए प्रधान मंत्री और सब लोग कहते हैं। किसने जान बचाई थी संत फतेसिंह जी की, प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने जान बचाई थी, चिरांगा किये थे पंजाब में, रौशनी की थी, जस्टिस गुरनाम सिंह के चीफ मिनिस्टर ने कहा था कि इससे बढ़िया फैसला नहीं हो सकता, लेकिन अब उसी फैसले से मुकर रहे हैं। यही नहीं रोज ब रोज नई बात आती है। परसनल ला की बात खड़ी कर दी है। मैं आपको कहना चाहता हूं, आपकी वसातत से हिन्दुस्तान के लोगों को कहना चाहता हूं कि यह झगड़ा न तो झगड़ा है पानी का, न चण्डीगढ़ का, न किसी और टेरिटरी का, यह झगड़ा है ताकत का, ताकत उन को दे दो तो कोई मसला नहीं है, ताकत नहीं दोगे तो सब मसले खड़े करेंगे। चांद और सूरज भी प्लेट में रख कर देंगे तो वे नहीं मानेंगे, न उन्होंने कभी किसी कमीशन की फाईंडिंग को माना था और न आगे मानेंगे। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि उनके पीछे हाथ है अमेरिका का, उनके पीछे हाथ है पाकिस्तान का, उनके पीछे हाथ है उनका जो कि हिन्दुस्तान को कमजोर करना चाहते हैं, जो ताकत सबको कमजोर करना चाहती है, वह लोग हैं जो प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की लीडरशिप को कमजोर करना चाहते हैं। जो नहीं चाहते कि इस डेवलपिंग वर्ल्ड में हिन्दुस्तान जो इमर्ज हो कर आये, हिन्दुस्तान सारे संसार में नेता बन कर आ रहा है, डेवलपिंग कण्ट्रीज का थर्ड वर्ल्ड कण्ट्रीज का, वह नेता बन सके। उनको एक आंख नहीं भाता कि हिन्दुस्तान नान एलाइड चेयर परसन हो, उनको नहीं भाता कि हिन्दुस्तान जो डेमोक्रेसी का आलमबरदार बन कर सारे संसार में दुहाई देता है अमन और शांति की वह दे सके। इसलिए

हिंदुस्तान को कमजोर करने के लिए सियासी और इक्तिसादी तौर पर मंसूबा बनाया जा रहा है और मुझे सख्त अफसोस है कि आपोजीशन वाले या तो जानबूझ कर या अनजाने में उसी धंधे में फंसते जा रहे हैं, वही बात करते जा रहे हैं जो कि वाशिंगटन से उठती है, जो रावलपिंडी से उठती है, इस्लामाबाद से उठती है। हिंदू और सिक्खों में फर्क डालने वाले समझ लें कि हमारे गुरु एक हैं। इतिहास एक है, ग्रंथ एक है और खून एक है। हममें रोटी-बेटी का रिश्ता है। मुझे बतायें इसको कमजोर करने वाले जो लोग हैं, जो नफरत के पुजारी हैं उनको सिवाय इसके कि वे नाकामयाब हों क्या और कुछ उन्हें मिल सकता है।

इसलिए मैं सुरेन्द्र मोहन जी से कहना चाहता हूं कि यह अपनी यादाश्त को ताजा करें। लीजिए रीजनल फारमूले से लेकर आज तक क्या अकाली दल वाले कभी एक बात पर खड़े हुए हैं। कभी खड़े नहीं हुए हैं और कभी खड़े होने वाले नहीं हैं। आप जितना अपने पार्टी एण्ड के लिए, अपने सियासी अग्रराजों मकसद के लिए अकाली दल को अपनी झोली में डाल कर रखना चाहते हैं, डाल लीजिए लेकिन कामयाबी आपके दरवाजे पर खड़ी नहीं होगी, आप कभी कामयाब नहीं हो सकते चूंकि देश का इंटरेस्ट पार्टी इंटरेस्ट से मुकदम होता है, बस मुझे और कुछ नहीं कहना है।

SHRI HARKISHAN SINGH SURJEET (Punjab): Mr, Deputy Chairman, Sir, I would have liked if my friend, Mr. Mittal. had deait with something about ':he Punjab situation because the situation is very serious. It reminds me of the situation which was prevailing before 1947-Earlier in the "debate also I have thrown some light on it, and now the situation has fur:her worsened, and in three cities communal riots have taken place, riots between Hindus and Sikhs, which had never occurred in the State of Punjab. We had never seen such a thing. Now, not only this. In the cities if you go, outward!: you will see the feeling that nothing i there. So also in the villages. But ii reality, as it was happening before 1947 immedia'ely before that you are able t( find that the communa] polarisation i taking place, poisonous propagahuri" whicl is being carried out, is having its effect although outwardly there is no expressioi of [:. Now it has started spreading t( other areas too. The situation in Haryan also is not quite good. And if it is allowei to persist, it is going •:o spread throughou the country. Punjab being a border Stati we are also concerned about it. It is no •;he monopoly of the Congress Party ti be concerned about the unity of th country and the conspiracies which ar being indulged in by foreign powers Perhaps it is only now, since last month tha; you are talking about it. We ar telling it, since long, that from Americ some passports are being issued, tha Khalistan boards are being set up 1 Canada. Then it was no-, the "Congres Party which talked about'it. The Govern ment came forward recently. I am happ that thg Government has come forwar wi:h ths suggestion that the American are behind these disruptive activities, an every Indian should condemn it. An separatist movement which is being creat ed in the country by foreign powers i disastrous for the unity of ':he countrj The unity of the country is to be pro tected. This is not a job of a single part; but X)f all the ■ political pareies in th country.

How has the situation developed? N doubt, since more than a year murder are taking place, and extremists are in dulging in some activities, but where i the Government? Has the Governmer been able to create a si':uation of conf dence among the people tha! their live can be protected? On the other ham what has happened is that commum polarisation ij taking place in'the State c Punjab. In ihe same State which unitedl faught against 'he British imperialist Hindus, Muslims, Sikhs and Christiai alikj fought against the British imperialis and shed their common blood for tl freedom of the country, today such situation is happening about whii everybody feels concerned should feel co cerned. And then, some extremists a

[Shri Harkishan Singh Surject]

allowed to carry on their activities, indulg- ing in murders. But the Government has not been able to bring them to book. even today. Tha'l is why we feel concerned about it and its effect on the adminisiration. I am forced' to say this that today the administration in Punjab is very badly divided. I have never seen such a situation in the State of Punjab earlier. A policeman, a Sub-Inspector is murdered in daylight in Phagwara. An ASI was sitting in the adjoining room with two policemen. IT takes five minutes. The motor-cycle was not working. But the man Was not caught. These two person.s who killed that Sub-Inspector, were not caught. This is the slate of affairs. You must ponder over it. Why is jt so? And this has happened because many things have got mixed up, the activities of the extremists and the genuine demands of certain sections of the people. In that respect they are able to mobilise people behind them, and ':he extremists are in a position to get the cover. The necessity is to solve those problems, isolate the extremists and fight them back politically and administratively. They cannot be fought only administratively. They have to be fought poli'.'ically too. And then in that respect I would like to say that the responsibility of the Government is much greater. *I:* is one year now. The movement is on. Before that negotiations were going on for a year between the Government and the Akalis. Nothing happened. No result. It is only after the movement is launched after many months after that, the negotiations started. The Government readily agreed to the religious demands. Earlier as far as my information goes, the Akalis were saying, "You accept our religious demands. Others can be negotiated". But the Government did not agree on fhat at that i:ime. But now the Government readily agreed on that. We may have our reservations over them, on those demands. It readily agreed. Good. But what about 'he otTier demands? Many demands were talked about, r am sorry that the Prime Minister is con-tinuously blaming the Opposition in her s:atements. You must give credit to the Opposition. The Opposition gave a helping hand in solving the problem. I would like the Home Minister to state here what happened in the tripartite meetings, how the Akalis were forced to demarcate themselves on the separatist demands, how they werg forced to demarcate themselves on the interpretation of Anandpur Sahib resolution and how they were brought down to the position that there was no qiiestion of bring-ing in Rajasthan in ihe river water dispute. Is it a small thing which the Opposition has done? It is very wrong to say that the Opposition's role is disruptive. In fact, when the Government started negotiation, all '.he Opposition parties met together and welcomed it. They passed a resolution unanimously welcoming the proposal for direct negotiations between the Akalis and the Gov-ernmeor. It is very wrong and unjust to blame the Opposi:i6h. Now, wliat is the crux of the problem? Who is responsible? I would say that on the religious demands, the Government has decided unilaterally, biK thsy ""have accepted the demands and the Home Minister also in his statement of June 26 has made it very clear saying, "Yes, they have been accep:ed". About the other things, he said they could be considered. I do not want to go into them because I have got my own reservations, and doubts about those demands. I do not want to go into them because I do not want to come m the way if a setilement can be arrived at on those issues. Now on religious demand remajnes an<i Chat is about the Gurdwara Act. In principle the Government has agreed to Tiave an All India Gurdwara Act. Earlier * suggestion was made, which was agreed to, that the Act would be finali.sed in consultation with thg Shiromani Gurdwara Prabandhak Committee and that the concerned Giwdwaras would also be taken into confidence. I want to make it very clear that all the seven Managing Commitees of all the historical Gurd-waras havg already adopted resolutions endorsing the suggestion of having an AH India Act. What is the hitch now? Why can't their demand be accepted? About the details of the Act, Parliament is there. We will go into it. We will not allow any body to meddle with the parent Ac, in such a way as to cut out or delete certain portions which are very relevant for the situa-

tion today. The Parliairtent will see to thaf So what is the difficulty now? Now you give the plea that thg Sta'.e Governments are to be consulted. This plea was there for seven years in relation to Haryana and Gurdwara elections could not be held in Punjab because after the separation of the State, the same plea was taken. But one day /-.*he* Haryana Chief Minister was called and the problem was solved and the Gurdwara elections were held. So that argument does not stand. Now, what are the ofher remaining demands? There are ihree major demands which were under discussion. One demand is about the restructuring of Centre-State relations. About that, already .he Government has appointed a commission and the Home Minister has stated in his statement -hat in essence they have accepted that demand. The second was about "he water dispute. I do not know, why Mr. Mittal has related so much. Perhaps he has not consulted "his party. What is the demand? The demand jg only for a judicial scrutiny. They are no: asking for the Haryana waters to be given to Punjab or for the Punjab waters to be given to somebody also. The demand is not that less water should be given to Haryana. The only demand was thai; there should be a judicial scrutiny so that there is no arbitrary power given to the executive to give this much water to this State and that much. water to the o'^her State. But one day fhere is one statement and another day there is another statement. ■ Fortunately—Mittal saheb perhaps does not know—the Home Minister in his statement has accepted that demand. Now if somebody raises a controversy, even if the Akalis raise a controversy, nobody will support them. If they say, "We want to bring in Rajasthan, nobody is going to support them." Here the Opposition helped the Government very much. They were insisting, "Unless you bring in Rajasthan, we won't settle it." The Opposition came forward and forced them to agree to our point. Now the only question that remains is the territorial dispute. Can't the Government solve this question? The Government can. There is a small problem remains. For that also the Opposition came to your help. They put forward certain proposals in Delhi meeting. You said, no, then get some other proposal—^wfaich you can pursue. Yovi have to settle it; you cannot get it remain unsettled . You are right; yes, that Akalis did not settle it during Janata regime; then, why did not you settle it, why did not you implement it for ten years? The agreement was arrived at in 1970. It was your responsibility. From 1970 to 1976 the Government at the Centre, the Congress Government, was not able to implement that award. So we should not allow the situation to drift; otherwise, you are playing into thg hands of the Sikh extremists and also Hindu extremists who are organising themselves in the form of Hindu Raksha Samiti. The Prime Minister was very kind in giving them a very good hearing. You read the newspapers. I read Ajay and Akali Pat-rika. Perhaps they have the patronage of the Congress Party. They are indulging in poisonous propaganda. It looks as if they have no concern for the Slate of Punjab, with the common welfare of the people of Punjab, for the unity of the country. That is the situation that has come about. That is why what we are demanding is any policy of drift on the solution and allowing the extremists to pursue their game will play havoc. Now it is spreading to Haryana. What happened ovi 8th? They organised a Harvana Suraksha Samithi. Wherefrom does the danger come? They can say in Punjab, yes. We are in a minority, Sikh extremists are indulging in all sorts of activities, so we have to protect ourselves. But why are fne people in Haryana organising a Hindu Suraksha Samithi? You go into the character of the Samithi Who are there? You will be able to see Congressmen are in the forefront there. What happened on that day? It is a pity. Out of fear the Sikhs agreed to observe a hartal on 8th in Karnal. They closed the shops as per the agreement. They were afraid. But what happened afterwards. It was 4 O'clock. Some people attached the gurdwara. At another place I was sorry to find that one Punjabi family was attacked in Kuruk-shetra district. In fact, only one family remained in that particular village. That family was attacked. One was murdered; one was very seriously injured and was in hospital. It happened on 17th night.

Nobody sympathised with them. This is where the situation it is leading to. Nof

[Shri Harkishan Singh Surjeet]

human.sympa'.hy. It was only on 19th that the police handed over the body and allowed to be burnt. In Punjab in one village four Hindus were forced to leave the village by the extremists. Such is the si'.uation now not only in Punjab. You can blame each o her! The whole country will get affected at a lime when Pakistan is being armed by the Americans and there is a great danger from the borders. That is the situation that has developed. That is why I say any further drift in ihs policy will prove dangerous. Differences ate narrowed and narrowed down further with the efforts and assistance of the Opposition parties. [ say all the Opposition parties have been helpful. It is ungrateful of you to say anything and blame the Opposition parties for instigating the Akalis. Can you cite one single instance of instigation? It is We who carried on a direct campaign against Bhindaruwala, against Dal Khalsa. Even T hold public meetings and press conferences, and tell them, he cannot be called a saint, a saint is something else. He is the leader of anti-social elements. I openly said in press conferences in Jullundur. Nobody has the guts to say this about him. I know the Home Minister is hesitant. I do no; know why. Six months ago statements were given by ar-"ested extremists and they were tape-recorded by the Punjab Government. In those statements it was said who killed whom; all the details were given. Since 8 months we are demanding here for a white paper. Why were these facts not placed before the House so that we could isolate and fight out these criminals who are playing havoc, playing with the lives of the people of Punjab and who are threatening the unity of tfie country with slo??ns like Khalistan and others? Very recently, last week or so, you must have heard that some seventeen people have been arrested in Punjab. It has come in the press. They have given statements saving somebody there was the assistant of Bhindranwala somebody was operating from this Gurdwara or that Gurdwara. Why do you hesitate to come forward with all the facts? Why are .vou afraid of brinning out a White Paper? 1 do not know otherwise how the extremists are going to bg isolated. Can any Congress-man address a public meeting there and" criticise them? My Party is taking out jathas of hundred men and two hundred men every day in every village for bringing about unity among the Hindus and the Sikhs, We ask them to defend themselves against the extremists and we fight against extremists. It is not the Congress Party which is doing it. It is we who are active there_ I do not know why "he White Paper is not being issued and why the activities of the extremists are not exposed. If the extremists are exposed, it will help others also because nobody wants Gurdwaras to be used for harbouring criminals. Nobody wants these shrines to be allowed to be used for such activities and_. for harbouring the criminals. We have said so not once, but many times, in fact since the hijacking has taken place. After that twice it has happened. Everybody has denounced it. Here again, it was due to the efforts and contribution of the opposition parties when they met in Delhi, that Akali representatives signed a statement denouncing violence. The Akali representatives were there at the meeting. They categorically said that "we have nothing to do with Khalistan and we denounce the separatist movement of Khalistan and we denounce violence" If you have read it, you would have seen that they had categorically said so.

I do say that there are many extremists who make fiery speeches in the precincts of Gurdwaras. You know that. Why is ' the Government afraid of settling the issues with the Akali leadership? I can assure them that if they decide to settle the main issues, extremists can be isolated in a week. If their genuine demands are accepted, then the other issues can be separated. And then these extremists can be fought back and the, unity of the Punjabis can be restored which will of course stren-gthen: the unity of the country.

Finally and ultimately I would request the Government to ponder over. It is your policy of drift which is responsible for this. There is no dearth of secular-minded patriotic people who have done so much and have made sacrifices for the progress of Punjab and the freedom struggle. They will come forward to defend the unity of the country. But it is your policy of drift

because of which the issues get mixed up. You accept their genuine demands, and settle one small issue for which you can have any formula without harming any State. Have any formula. Evolve some formula and have negotiations on that and find out some solution. If this is done, then you will find that the extremists can be isolated and the situation can be changed. Othenvise we are faced with the serious danger. Arms are being collected on both, sides. There is no dearth of arms at the P;ikislani border and maybe they are . encouraging all these things They will encourage all these things. Then it will have very disastrous efl'ect. It is to save the situation which is prevailing in the State that I am suggesting this. We feel concerned abuot it and we want the Government to intervene.

Finally I want to tell Mr. Mi'.tal that Jagjit Singh Chauhan was denounced not once by Longowal and even the Eritisli paper had published that interview in which he said that we have nothing tO' do with him and he is a traitor of the panth. I want to remind my friends in thei Congress Party that he was in the legislature in 1968 and then it was the Congress Party which made him the Finance Minister in the Government of Mr. Gill formed with defectors. You go through the old records and.you will find this...

SHRI SAT PAUL MITTAL: Communists have also been in the Congress You know it.

SHRT HARKISHAN SINGH SURJEET: I know it arid I am proud of that. We were in the Congress when many of its present leaders were not even found anywhere in the Congress or in the Independence movement. I can claim
*'4* *»^ that because I was in the Congress i,n 1930 and I was imprisoned when I was in the Congress for 8 years.

SHRI SAT PAUL MITTAL: Others also have been imprisoned.

.^ SHRI HARKISHAN SINGH SURJEET: Yes, they havg also made sacrifices. But I have only given an instance. Defection was organised and he was taken out of the Akalis to dismiss the Akali Ministry in 1968 and that was done and that Ministry could not last and that is a different matter. Similarly, about the other thing. I would like to request him to go to the Chief Minister of Punjab and to see the files. Nobody in Punjab has accepted the 1970 award. All the parties unanimously adopted a resolution and it is in the records of the Chief Minister and he brought it before the tripartite meeiing. That is all that I want to say.

Finally, I want to request the Government not to allow this drift to take place any further. Take immediate steps because what happens in Punjab will not remain there, but it will have its repercussions throughout (he country. That is why I would request the Government not to pursue the policy of drift. I am against sacrificing the interests of any State. But find some rational solution in consultation with the concerned people. Don't think that there are no F>eople in Punjab who are not feeling concerned about the people of the country. There are people and take them into confidence and come *to* s"'no settlement and then ease the situation. «)-late the extremists, fight them back and come out with a White Paper to expose those rascals who are playing havoc with the life of the people of Punjab.

**श्री पी० एन० सुकुल** (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदय, बड़े खेद का विषय है जो कुछ पंजाब में हो रहा है । जो हत्याएं और हिंसा का बाजार गर्म हो रहा है उसके कारण हमारी गर्दन शर्म से झुक जाती है और सबसे अधिक अफसोस तब होता है जब हमारे ही विरोधी दल के कुछ लोग उनकी हिमायत करने लगते हैं, उनकी तारीफ करने लगते हैं । (**व्यवधान**) कुछ लोगों के बारे में मैं कह रहा हूं । अभी सुरजीत जी बोले । उनकी पार्टी की बात नहीं है । विरोधी दल का जो रवैया रहा है इस इशू पर उस बारे में मैं कह रहा हूं । हमारे चौधरी साहब का क्या रवैया था ? उन्होंने हमसे एग्री किया था । लेकिन वह चौधरी

[श्री पी० एन० सुकुल]

साहब जैसा हम समझ पाये, जब उनको दो-तीन थ्रैट मिले, उनके जीवन को खतरा पैदा हो गया तो वही चौधरी साहब 30 जून को आपके विपक्षी दलों की बैठक में शामिल हुए। उन्होंने आपका जो फार्मूला था कि चंडीगढ़ पंजाब को दे दिया जाए और पंजाब का कुछ हिस्सा हरियाणा को दे दिया जाए, पानी की बात ट्राइ-ब्यूनल को दे दी जाए, इस बात को उन्होंने 30 जून को एग्री किया। जब पहली जुलाई को हरियाणा के एम० पी० और एम०एल०ए० की बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता चौधरी साहब ने की तो वहां चौधरी साहब बदल गये। उन्होंने कहा कि नहीं, चंडीगढ़ का बटवारा होना चाहिए। हमारे सी० पी० आई० के जो साथी हैं उनकी मांग यह थी कि उनकी रिलिजस अर्थात् धार्मिक मांगें नहीं मानी जानी चाहिएं। हमारे बहुगुणा जी का शुरू का क्या भाषण था और अब का क्या भाषण है। आज वह कह रहे हैं कि सिख कौम एक राष्ट्र नहीं है। आडवाणी साहब की पार्टी का एक रुख रहा है लेकिन लखनऊ में 30 जून को बोले कि अकाली दल और कांग्रेस दोनों इसके लिए जिम्मेदार हैं। आज पंजाब में जो हो रहा है उसके लिए ये दोनों जिम्मेदार हैं। दोनों कैसे जिम्मेदार हो सकते हैं। आप दोनों को जिम्मेदार बता कर दोनों को एक बराबर के पलड़े में रख कर अपने को अलग रखना चाहते हैं। हमें अफसोस है कि जब सुरेन्द्र मोहन जी बोल रहे थे मैंने देखा कि पहली बार गर्म होते हुए बोल रहे थे। ऐसा लग रहा था कि जैसे अकाली दल की हिमायत कर रहे हों। उन्होंने हमें याद दिलाया कि उन लोगों को और दूसरे लोगों को हिंसा नहीं करनी चाहिए।

[उपसभाध्यक्ष (डा०) (श्रीमती) नाजमा हेपतुल्ला) पीठासीन हुईं]

लेकिन उन्होंने यह नहीं देखा कि 10 जुलाई को तरनतरन में जो सम्मेलन हुआ उसमें क्या-क्या कहा गया। क्या उसमें खालिस्तान की मांग का समर्थन नहीं किया गया? क्या वहां सरकार से सीधी टक्कर लेने की बात नहीं की गई? 16 जुलाई को अमृतसर में अकाली दल के जिला इकाइयों के अध्यक्षों की बैठक हुई। उसमें क्या कहा गया था? उसमें संविधान की धज्जियां उड़ाई गईं। संविधान को खतम करने की बात कही गई। खालिस्तान की बात कही गई। आज आप जिस वक्त उनकी हिमायत करने लगते हैं वे एक संकुचित और एक छोटे से स्वार्थ के लिए तो मैं समझता हूं देश के लिए एक बड़ी गम्भीर स्थिति पैदा हो जाती है। छोटे से राजनीतिक स्वार्थ के लिए पूरा देश, पूरी कौम की अखण्डता और स्वतन्त्रता को दांव पर लगा रहे हैं। आज आप असम की और पंजाब की बात करते हैं।

आसाम में फारन नेशनल्स की समस्या है। वहां से फारन नेशनल्स को निकालने की बात कही जाती है। लेकिन पंजाब में क्या हो रहा है? यह कहा जा रहा है कि देश के एक हिस्से को देश से अलग कर दिया जाय। एक स्थान पर तो वह हिस्सा देश का भाग रहने वाला है और दूसरे स्थान पर देश के हिस्से को अलग करने की बात कही जा रही है। इस तरह से ये दो अलग-अलग मूवमेण्ट चल रहे हैं। हमारे अपोजीशन के लोग उनकी हिमायत करते हैं। आप इस तरह से अपनी पार्टी और देश को नहीं चला सकते हैं। देश के साथ गद्दारी करके देश को नहीं चलाया जा सकता है। इस तरह से आपकी पार्टी भी चलने वाली नहीं है। आपने कहा कि गुरुद्वारों के बाहर लड़ाई होती है। लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि डी० आई० जी० अटवाल को गोली कहां से लगी? उन पर गोली गुरुद्वारे

के अन्दर से चलाई गई। आज तक अपराधियों को गिरफ्तार नहीं किया जा सका क्योंकि वे गुरुद्वारों में छिपे हुए हैं। बलबीर सिंह सिन्दू गुरुद्वारे के अन्दर है वहां पर प्रेस कांफ्रेन्स करता है और रोज उनके बयान निकलते हैं। लेकिन गुरुद्वारों में बन्द होने के कारण उनको गिरफ्तार नहीं किया जा सका है। हमारी इंदिरा जी की सरकार की शुरू से ही यह कोशिश रही है कि हम बातचीत के जरिए से मसलों को हल करें, नेगोशिएशन के जरिए से मसलों को, हल करें। आज आप हमारी उदारता को, इन्दिरा जी की सरकार की सहिष्णुता को उनके धैर्य को बुरा कह रहे हैं। अगर वहां पर इमरजेन्सी लगा दी जाय, लोगों को मारा पीटा जाय और जो गुरुद्वारों में घुस गये हैं उनको वहां से बाहर निकाला जाये, क्रिमिनल्स को पकड़ा जाय तो आप कांग्रेस को और इंदिरा जी को बुरा कहेंगे। ये दोनों चीजें कैसे चल सकती हैं। आप दोनों नावों पर पांव नहीं रख सकते हैं। आज पंजाब जल रहा है। अभी हमारे मित्र श्री मित्तल जी ने कहा कि पाकिस्तान, अमेरिका और दूसरे मुल्क इस आन्दोलन को चलाने में मदद कर रहे हैं। पाकिस्तान में ननकाना साहिब में एक बंगला बनाया गया है जिसमें जगजीत सिंह चौहान और गंगासिंह ढिल्लों आराम करते हैं, वहां ठहरते हैं। आप पंजाब के बार्डर पर जा कर देखिए कि किस प्रकार से खालिस्तान के पोस्टर लगे हुए हैं और किस प्रकार से खालिस्तान मूवमेंट को सपोर्ट किया जा रहा है। गुजरांवाला में पाकिस्तान में उग्रवादियों को ट्रेनिंग दी जा रही है, पाकिस्तान उनको ट्रेनिंग दे रहा है। आप कहते हैं कि यह छोटा मसला है। पानी की समस्या है और चण्डीगढ़ की समस्या है। लेकिन यह एक बहुत बड़ी समस्या है। इसमें शरारत और षड्यंत्र किया जा रहा है जिसमें दुनिया के बड़े-बड़े देश शामिल हैं। इसमें अमेरिका भी लगा हुआ है, यूरोप के देश भी लगे हुए हैं और पैसा दे रहे हैं, हथियार दे रहे हैं, ट्रेनिंग दे रहे हैं। उनका मोरल बूस्ट कर रहे हैं। अगर आप ऐसे तत्वों का समर्थन करेंगे तो आपको भारत माता कभी माफ नहीं करेगी, इस देश की जनता कभी माफ नहीं करेगी, इस देश की तवारीख कभी माफ नहीं करेगी। यह कलंक हम सब पर एक साथ लगेगा। इसलिए मैं आपसे बहुत अदब के साथ कहना चाहता हूं कि जो लोग या अकाली दल के जो लोग सिखों को एक राष्ट्र कहते हैं, यह बहुत गलत है। मैं पूछना चाहता हूं कि सिखों को एक राष्ट्र कहना क्या सही है ? क्या कोई एक धर्म एक राष्ट्र हो सकता है ? हमारे देश में जैन धर्म है, बौद्ध धर्म है। क्या जैनी अपने को अलग राष्ट्र कह सकते हैं ? क्या बौद्ध अपने को अलग राष्ट्र कह सकते हैं ? क्या वे कह सकते हैं कि उनको अलग हिस्सा मिलना चाहिए ? जहां तक मुसलमानों का सवाल है, एक बार, एक जमाने में देश के दो टुकड़े हो गये, पाकिस्तान बना। कुछ मुसलमान अपने को अलग राष्ट्र कहते थे, वह बात उस वक्त समझ में आई क्यों कि वे बाहर से आये थे। चूंकि वे बाहर से आए, इसलिए अपने को अलग राष्ट्र कह सकते थे.... **(व्यवधान)**।

**श्री हरकिशन सिंह सुरजीत** : मुसलमान कहां बाहर से आ गए ?

**श्री पी० एन० सुकुल** : मैं उस वक्त की बात कह रहा हूं। आज की बात नहीं कह रहा हूं। यह एक हकीकत है, आप इसको झुठला नहीं सकते हैं..... **(व्यवधान)**। इसमें अंग्रेजों का हाथ था, यह ठीक है, लेकिन उन्होंने हमारी

[श्री पी० एन० सुकुल]

कमजोरी का फायदा उठाया । जिन्ना साहब यह बात कहा करते थे ।... ...(Interruptions)

SHRI A. G. KULKARNI (Maharashtra): Mr. Sukul, do not create another problem.

SHRI P. N. SUKUL: No, you are creating it; I am not creating it. (*Interruptions*) सिख हमारे देश का एक समुदाय है, इसी हिन्दुस्तान में वे पैदा हुए, इसलिए वे कैसे कह सकते हैं कि वे अलग राष्ट्र हैं ?

श्री हयातुल्ला अंसारी (नाम-निर्देशित): आपने जो कहा कि मुसलमान बाहर से आये, अपने ये अलफाज उनको वापस लेने चाहिए ।

**श्री पी० एन० सुकुल :** आप मुझे प्रोटेक्शन दें । मुझे अपनी बात कहने का मौका दें । मैंने अपनी बात नहीं कही, मैंने तवारीख की बात कही, मैंने जिन्ना की बात कही, मैंने कानून की बात कही । लेकिन आज कम से कम सिख राष्ट्र का कोई दावा नहीं कर सकता कि हम अलग राष्ट्र हैं । वे इसी हिन्दुस्तान के अन्दर पैदा हुए हैं तो वें अलग अपने को कैसे कह सकते हैं । धर्म के ऊपर अगर राष्ट्र बनेगा तो फिर यहां जैन धर्म है, बौद्ध धर्म है, रिलीजन को लेकर ....(**व्यवधान**)

क्या आज जो अकाली कह रहे हैं वह पूरा पंजाब कह रहा है, क्या अकाली दल पूरे पंजाब को रिप्रेजेन्ट कर रहा है, वहां 50 प्रतिशत दूसरे लोग हैं, वहां दूसरे सिख हैं । निरंकारी हैं, तमाम दूसरे लोग है । सिर्फ अकालियों की बात मानकर कैसे देश को चलाया जा सकता है । उनके हठ के आगे झुककर सरकार इस देश के साथ न्याय नहीं कर सकती है और यही वजह है कि हमारी सरकार बड़े धैर्य, बड़ी सहिष्णुता, प्रेम और सद्भावना के साथ कोशिश करती चली आ रही है ताकि इस मामले का हल हो सके । आपको बुलाकर, आपके जरिये, आपकी राय लेकर और दूसरे तरीकों से भी कोशिश कर रही है लेकिन वे लोग जैसे मैंने कहा कि जो दूसरे मुल्कों के इशारे पर काम कर रहे हैं वे कभी भी आपके साथ बैठकर आपकी बात नहीं मानेंगे । आपने कहा कि धार्मिक मांगें नहीं मानी गई । इंदिरा जी ने उनको वहां नहीं माना, अमृतसर में, लेकिन दिल्ली में माना । एक आदमी जिसको भूख लगी है और एक आदमी उसको खाना दे रहा है, लेकिन वह कहता है कि मैं इस आदमी का खाना नहीं खाऊंगा, मैं अमृतसर में खाना खाऊंगा, इसका क्या मतलब है । जब उनकी मांगें मान ली गई तो इस पर उनको खामोश हो जाना चाहिए । उनको रियलाइज करना चाहिए था कि इतनी मांगें मान ली गई हैं और बाकी पर कांग्रेस पार्टी के साथ बैठकर, सरकार के साथ बैठकर शांतिपूर्ण ढंग से उनको बात करनी चाहिए थी । उन्हें हिंसा का बाजार गर्म नहीं करना चाहिए था, हत्याओं का सिलसिला शुरु नहीं करना चाहिए था । इसलिए मैं अपनी प्रधान मंत्री महोदया से यह निवेदन करना चाहूंगा कि वहां की स्थिति को इस तरह ज्यादा न चलने दिया जाय । हम एक सैकुलर स्टेट हैं और हमारे लिए मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे सब बराबर हैं । अगर सरकार की पुलिस किसी मस्जिद में जाकर किसी अपराधी को पकड़ सकती है, मंदिर में जाकर पकड़ सकती है, वहां उसको इसका पूरा हक है तो फिर गुरुद्वारे में जाकर क्यों नहीं पकड सकती । मैं यह दरख्वास्त करूंगा कि वे एक ऐसी व्यवस्था करें कि जो अपराधी गुरुद्वारे में

जाकर शरण ले रहे हैं जो हमारे देश की अखण्डता और एकता के साथ खिल-वाड़ कर रहे हैं उन सब को पकड़ कर उनको कठोरतम सजा दी जाये । उनका ट्रायल होना चाहिए । मैं समझता हूं कि हमारे जो विपक्षी दलों के भाई हैं उनको भी थोड़ा देश-भक्त होना चाहिए । उन्हें सिर्फ पार्टी-भक्त नहीं होना चाहिए । उन्हें देश के बारे में पार्टी से ऊपर उठकर सोचना चाहिए और इस नाजुक मसले में सरकार का हाथ बंटाना चाहिए ।

**श्री सैयद अहमद हाशमी** (उत्तर प्रदेश): सुकुल जी ने जो अल्फ़ाज यहां पर कहे कि मुसलमान गैर-मुल्की हैं, वे अपने इन अल्फाज को वापस लें । .... **(व्यवधान)** ....

†[شری سید احمد ہاشمی (اتر پردیش): شکل جی نے جو الفاظ یہاں پر کہے کہ مسلمان غیر ملکی ہیں وہ اپنے ان الفاظ کو واپس لیں۔]

**श्री पी० एन० सुकुल** : मैंने यह नहीं कहा । मैंने पाकिस्तान बनने के पहले जो हालात थे, उस वक्त जो कहा गया था वह बात कही ।

**श्री सैयद अहमद हाशमी** : आपने कहा कि मुसलमान बाहर के हैं ।

†[شری سید احمد ہاشمی: آپ نے کہا کہ مسلمان باہر کے ہیں۔]

**श्री इन्द्रदीप सिंह** : उपसभाध्यक्ष महोदया, इसको प्रोसीडिंग्स से निकाल दिया जाय ।

**श्री सैयद अहमद हाशमी** : वाइस चेयरमैन साहिबा, मैं अर्ज कर रहा हूं कि आप इसमें इंटरवीन कीजिए और जो अल्फाज उन्होंने कहे हैं या तो वे उनको वापस लें या आप उनको प्रोसीडिंग्स से निकाल दें ।

†[شری سید احمد ہاشمی: وائس چیرمین صاحبہ میں عرض کر رہا ہوں کہ آپ اس میں انٹروین کیجئے اور جو الفاظ انہوں نے کہے ہیں یا تو وہ انکو واپس لیں یا آپ انکو پروسیڈنگس سے نکال دیں۔]

**श्री पी० एन० सुकुल** : उपसभाध्यक्ष महोदया, मैंने जो कहा वह मैंने तवारीख का कोट करके कहा था कि उस वक्त कुछ लोगों ने टू नेशंस थ्योरी की बात की थी । यह बात मैंने कही थी । उसका मतलब अगर आप ऐसा समझती हैं तो उनको फौरन कार्यवाही से निकाल दिया जाय । **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN [DR. (SHRIMATI NAJMA HEPTULLA)]: I will go through the proceedings and if anything is objectionable, I will remove it.

**श्री जगदीश प्रसाद माथुर** (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदया, कांग्रेस दल के जो प्रतिनिधि बोले हैं उससे ऐसा लगा जैसे कि चोर या मुल्जिम कटघरे में खड़े हो कर अदालत को ही चुनौती दे रहा हो । उन्होंने विरोधी दलों को जिम्मेदार ठहराया और अपनी भूरि-भूरि प्रशंसा की है । एक तो चोरी फिर सीना जोरी । यह रवैया कांग्रेस का कहा जा सकता है । (व्यवधान) मैं यह नहीं कहता कि अकाली दल बिल्कुल बेकसूर है । अकाली दल और कांग्रेस की सरकार मेरी नजर में दोनों बराबर के मुजरिम हैं । दोनों की निगाह एक ही तरफ है कि किसी प्रकार से पंजाब के अन्दर उस समय तक आग लगती रहे जब तक चुनाव न हो जाएं । अकालियों की निगाह इस बात पर है कि वहां तनाव रहे जिससे सिख और हिन्दू अलग रहें । मैं हिन्दू और सिख को अलग

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

नहीं मानता। सिख और हिन्दू एक ही हैं। एक ही हमारा धर्म है, एक ही संस्कृति है। एक ही इतिहास है। सब कुछ एक है। जब भी किसी विदेशी का आक्रमण हुआ तो हमने एक साथ मिल कर, एक दूसरे के साथ खड़े हो कर हिन्दुस्तान की इज्जत रखने के लिए खून बहाया लेकिन दुर्भाग्य है कि आज कुछ ऐसे लोग पैदा हो गए हैं जो अपने पुराने इतिहास को झुठलाना चाहते हैं, अपने बुजुर्गों और गुरुओं की शिक्षा को झुठला कर एक नया इतिहास बनाना चाहते हैं। जब कभी हिन्दू-सिख झगड़ा होता है तो हम लोगों के दिल में आग लगती है, दुख होता है। मैं मानता हूं हिन्दू सिख अलग नहीं हैं, एक हैं। लेकिन उनकी निगाह यह है कि अगर हिन्दू सिख एक रहेंगे तो हमारा नेतृत्व चला जाएगा, अकाली दल शायद चुनाव जीतेगा नहीं। इतिहास इस बात का गवाह है कि जब कभी हिन्दू और सिख इकट्ठे हो गये तब कांग्रेस की दाल नहीं गली। जहां पर अकालियों की निगाह सिखों के वोट पर है, वहां कांग्रेस की निगाह हिन्दुओं के वोट पर है।

**श्री पी० एन० सुकुल** : दिल्ली में दोनों एक हो गये।

**श्री जगदीश प्रसाद माथुर** : बिलकुल ठीक कह रहे हैं। आप ठीक कह रहे हैं कि जहां अपना उल्लू सीधा होता है वहां अकालियों का विरोध करते हैं, जहां दूसरी प्रकार उल्लू सीधा होता है वहां इनका साथ लेने देते हैं। कौन नहीं जानता अकाली दल ने कांग्रेस का दिल्ली के अन्दर साथ दिया है? कौन नहीं जानता श्री संतोख सिंह को कि वह यहां के पहले गृह मंत्री जी के साथी रहे हैं, मारे गये बेचारे कौन नहीं जानता? इसलिए मैं कहता हूं कि दोनों मुजरिम हैं (**व्यवधान**)।

**एक माननीय सदस्य** : और आप भी (**व्यवधान**)।

**श्री जगदीश प्रसाद माथुर** : मुश्किल यह है कि जैसे मैंने पहले कहा आप हमेशा हमें ही मुजरिम ठहरायेंगे क्योंकि हमारा एक ही जुर्म है कि हम कांग्रेस को हटाना चाहते हैं। अगर वह राजनीति के अन्दर जुर्म है तो हम मुजरिम हैं लेकिन अगर जुर्म नहीं है तो हम देशभक्त हैं। इसलिए मैं कह रहा था कि दोनों मुजरिम हैं। दोनों को एक कटघरे के अन्दर खड़ा करना चाहिए। अकाली दल आज जो कुछ कर रहा है वह अच्छा नहीं कर रहा है। मैं कम से कम यह विश्वास नहीं करता कि अकाली दल के अन्दर दो दल हैं एक एक्सट्रिमिस्ट है और कुछ ऐसे हैं जो कुछ माडरेट्स हैं। हो सकता है ऐसा हो। मैं पूछना चाहता हूं माडरेट्स खुल कर के इस बात का विरोध क्यों नहीं करते कि जो कुछ हो रहा है वह गलत हो रहा है। मैं बादल साहब की इज्जत करता हूं और जितने नेता हैं उनकी भी इज्जत करता हूं। लेकिन दुख तो यह होता है कि जब एक्सट्रिमिस्ट्स की ओर से हमले हो रहे हैं, हत्याएं हो रही हैं, उनसे वे अपना छुटकारा क्यों नहीं करते। अगर अकाली दल के दो टुकड़े हो जाएं और वह यह कह दें कि हम भिंडरावाला के साथ, एक्सट्रिमिस्ट्स के साथ नहीं हैं और उनसे अलग हो जाएं तो मैं उनका स्वागत करूंगा। हो सकता है कि बेचारे दिल से यह चाहते हों, भिंडरावाला का विरोध भी करना चाहते हों। कई अखबार कहते हैं कि उनको यह खतरा है कि भिंडरावाला कहीं उन को ही न मार डाले। अगर यह खतरा है तो मैं अकाली दल के दोस्तों से, सिख दोस्तों से कहूंगा कि साहस करें। जिनको विश्वास है कि एक्सट्रिमिस्ट जो कर रहे हैं वह गलत है। अगर उनको जान का भी खतरा हो तो जान का खतरा मोल ले कर उनको

सीधे-सीधे सच्ची बात कहनी चाहिए । ऐसे ही लौंगोवाल साहब और भिंडरावाला दोनों दोहरी बातें बोल रहे हैं । समझ में नहीं आता वे कभी कहते हैं कि दो राष्ट्र नहीं हैं, कभी कहते हैं कि तीन राष्ट्र हैं । मेरे मित्र अभी कांग्रेस के बोल रहे थे, मालूम नहीं किस जोश में थे, उनका विचार पता नहीं कहां खो गया था, उन्होंने कह दिया कुछ लोग देश के बाहर से आए । आए होंगे लेकिन सवाल तो आज का है । शायद अगर अकाली दल से उनकी न बैठी तो कल वह कह देंगे कि सिख भी बाहर से आए थे, पता नहीं । खैर सवाल यह नहीं है । सवाल यह है कि जो कुछ अकाली दल कर रहा है या उनके एक्सट्रिमिस्ट कर रहे हैं क्या यह ठीक है और यह स्थिति पैदा क्यों हुई ?

इसके लिए अकाली दल और कांग्रेस दोनों जिम्मेदार हैं । मैं इतिहास का लम्बा चौड़ा पृष्ठ खोलना नहीं चाहता । पहले पंजाबी भाषा की मांग की गई, उसके बाद रीजनल कमेटीज बनाई गयीं । किसने समझौता किया ? समझौता आपने किया । अलग पंजाबी सूबा मांगा गया, आपने पंजाब को अलग करके हरियाणा बना दिया । किसने किया, आपने किया । अगर उस समय आप मजबूत होते, कहते कि नहीं पंजाब का बटवारा नहीं होगा तो शायद हो सकता था कि बंटवारा नहीं होता । आज भी आप कह रहे हैं कि हम आपकी बात नहीं मानेंगे, लेकिन मानते भी हैं और दबते भी हैं । क्या यह सच नहीं है कि जब स्वर्ण सिंह जी प्रधान मंत्री महोदय के प्रतिनिधि बन कर अकालियों से बात करने गये थे तब उन्होंने इशारा किया था कि हम आपको सत्ता में भागीदार बनायेंगे । क्यों मुकर गये ? सीधी बात है चाहते थे कि सत्ता में भागीदार न बनाया जाय और झूठी बात से उनको कुछ नाम कर दिया जाय । कांग्रेस के लोगों के सामने केवल एक ही चीज है सत्ता चाहिए, ताकत चाहिए, पद चाहिए । पद के लिए, सत्ता लाने के लिए आसाम में कुछ भी कर सकते हैं, सत्ता के लिए काश्मीर में कुछ भी खेल खेलने के लिए तैयार हो सकते हैं । वहां पर हिन्दू-मुसलमान को लड़ा सकते हैं और आज सत्ता के लिए कभी अकाली दल से कहते हैं कि हमारे साथ समझौता कर लो, हम तुम्हें गद्दी पर ले आयेंगे, नहीं मानते तो तलवार चलाने को तैयार हैं ; लेकिन तलवार ही चलानी है तो हिम्मत के साथ चलाइये लेकिन आप समझौता करते हैं । किस चीज के लिए समझौता करते हैं ? पावर के लिए करते हैं, स्वार्थ के लिए करते हैं ।

भिंडरवाला ने खुल्लमखुल्ला कहा कि मैं दिल्ली आ रहा हूं अपनी बंदूक ले करके । दरबारा साहब ने पहले ऐलान किया कि उनके खिलाफ वारंट है, रेडियो पर कहा कि भिंडरवाला के खिलाफ वारण्ट निकल गया है । लेकिन दो दिन के बाद कह दिया कि वारंट नहीं है । भिंडरावाला दिल्ली आता है, ट्रक में आता है, स्टेनगन ले कर आता है । इतना ही नहीं श्रीमन जेल में जाता है, दिल्ली को, तिहाड़ जेल में वहां पर उसके साथी बन्द हैं, कहता है कि उनसे मिलूंगा । जेल के दरवाजे पर रोक दिया जाता है, पहरेदार कहते हैं कि आप अन्दर नहीं जा सकते । बंदूक, स्टेनगन लेकर जेल में नहीं जा सकते । वह कहता है कि नहीं मैं ऐसे ही जाऊंगा । दरवाजे पर बैठ जाता है, 4–6 घंटे तक झगड़ा होता है । आपकी सरकार, केन्द्र की सरकार, सेठी जी की सरकार कहती है कि हां इन लोगों को स्टेनगन ले करके अन्दर जाने दो, बन्दियों से उनको मुलाकात करने दो । किसने घुटने टेके ? भिंडरवाला को नेता किसने बनाया ?

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

कौन नहीं जानता, आपने बनाया । मेरे साथी श्री सुरेन्द्र मोहन जी ने कहा कि जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के चुनाव हुए तो भिंडरावाला कांग्रेस "आई" के प्रत्याशी थे, हार गये । तो नेता किसने बनाया । कौन नहीं जानता हमारे पहले गृह मंत्री महोदय ने चण्डीगढ़ के अन्दर इमरजेंसी के दौरान और उसके बाद दल खालसा की स्थापना कराई । प्रेस कांफ्रेंस की, किसने बिल पेमेंट किये थे ? लेकिन जब बात बिगड़ी जाती है तो कहा जाता है कि विरोधी दल की सहायता चाहिएं । विरोधी दल कोई एक दल नहीं है । तब सबको एक तराजू में नहीं रखा जा सकता । मुद्दों पर इकट्ठे हो सकते हैं। हां आपके साथ लड़ाई का प्रस्ताव होता है, हम जरूर इकट्ठा होंगे, हमें होना ही चाहिए, हमारा कर्तव्य है, हमारा धर्म है, हमारा अधिकार है । लेकिन मीठा-मीठा गप और कड़वा-कड़वा थू यह नहीं चलेगा । जब विरोधी दल ने कहा कि आपको समझौता करना चाहिए तो उस समय बात नहीं मानते, स्वर्ण सिंह जी को भेजते हैं । जब आपकी बात बिगड़ जाती है तो आप विरोधी दलों को इकठ्टा करते हैं । विरोधी दल ने कहा कि आसाम में चुनाव नहीं होने चाहिए, आपने चुनाव कराये । हमने कहा कि वहां खूनखराबा होगा, आपने नहीं माना । आज पंजाब के विषय में भी यह हो रहा है । (व्यवधान) यह भी हम भुगत लेंगे । अटवाल साहब की हत्या हो गई, वहां खुले बन्दी की गई, कई पुलिस अफसरों की हत्या की गई, खुले बन्दों में हत्यायें की गई । लाला जगत नारायण जी की हत्या हो गई, खुले बंदो की गई । चौधरी चरण सिंह को धमकी दी गई है, खुलेआम दी गई है । मेरे दोनों मित्र उधर से बोल रहे थे कि हम यह कर देंगे, हम वह कर देंगे । मैं पूछता हूं कि आपने किया क्या ? आपने कहा कि मुजरिम गुरुद्वारे में घुस जाते हैं बिल्कुल ठीक बात है, नहीं घुसने चाहिएं, हरगिज नहीं घुसने चाहिए । लेकिन श्रीमन वे वहां पैदा नहीं होते, जन्म नहीं लेते, वहां बढ़ते पलते नहीं हैं । वे कहां से आते हैं । रहते तो बाहर ही हैं, जन्म तो बाहर ही लिया है । अन्दर जाते हैं तो इस बीच में कहां से जाते हैं । क्यों नहीं पकड़ते ? पकड़ते इसलिए नहीं क्योंकि आप में पकड़ने की हिम्मत नहीं है । हिम्मत ही नहीं। इच्छा भी नहीं है । कारण क्या है ?

आज जब कि आपने पुलिस इन्स्पेक्टर जनरल श्री भिंडर जी को पंजाब भेजा है, काफी तीसमारखां रहने का इलान कर रहे हैं । बड़ी खुशी की बात है कि कुछ लोगों को वहां पकड़ लिया है । सेठी साहब ने कहा कि तलविंदर सिंह या बलविंदर सिंह, क्या नाम है, जर्मनी में पकड़ा है । क्या कहने यह आपकी पुलिस है । इंटरपोल पकड़ लेती है और सेठी जी अपनी पीठ ठोकते हैं । इण्टरपोल ने पकड़ा । आपने क्यों नहीं पकड़ा ?

अब जब से भिंडर जी पंजाब गये हैं, कुछ पकड़-धकड़ हो रही है । मैं पूछना चाहता हूं कि आज की स्थिति में जब कि आप कुछ पकड़ रहे हैं और कुछ कार्यवाही कर रहे हैं, तो आज की और आज से दो-तीन महीने पहले की स्थिति में क्या अन्तर है ? (समय की घंटी) वट वाज दी डिफरेंस ? क्या पहले आपके पास पुलिस नहीं थी, क्या आपके पास सेना नहीं थी या वहां कोई मुख्य मंत्री नहीं था, सेठी जो नहीं थे, इनमें से कौन नहीं था ? सिर्फ अन्तर एक है कि सौदा पट नहीं रहा था । समझते थे कि दबाव से अकाली दल को किसी तरह अपने पक्ष में किया जाएगा, उल्लू सीधा किया जाएगा।

जब देखा कि यह नहीं हो रहा तो सोचा कि अब आग भड़का कर हिंदुओं के वोट लेने के लिए अकाली दल को दबाना पड़ेगा, भारत सरकार ने रवैया बदल लिया। इसमें, श्रीमन्, कांग्रेस और अकाली दल दोनों बराबर कटघरे में खड़े हैं।

हमने मांग की है और फिर मांग करना चाहता हूं कि सरकार श्वेत-पत्र जारी करे, (**समय की घंटी**) श्रीमती इन्दिरा गांधी जी कहती हैं कि पंजाब में विदेशियों का हाथ है। विदेशियों का हाथ हो सकता है, क्यों नहीं होगा, और यह पड़ौसी हमारे कोई दोस्त नहीं हैं। जब कभी यहां कोई घपला होगा, उसका वह फायदा उठायेंगे। आप कह रहे हैं कि विदेशी सरकार का हाथ है, इस विषय में आपकी सरकार क्या कर रही थी ? स्टेट्समैन का हवाला दिया है मेरे मित्र ने, ठीक। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के अन्दर गोरिल्ला ट्रेनिंग कैम्प चल रहे हैं। आपको आज यह पता लगा। अगर आज पता लगा है, तो आप नाअहल हैं, आप अयोग्य हैं, आपको गद्दी छोड़ देनी चाहिए। आपको आज पता नहीं चला, आपको पहले से पता था। आज आप कहते हैं कि अमरीका के लोग साथ दे रहे हैं। आपकी पार्टी के बड़े भारी मंत्री एक बड़े व्यक्ति के पुत्र कहते हैं कहा जाता है कि खालिस्तानी नेता की रीगन से मुलाकात हुई, क्या यह ठीक बात है। अगर मुलाकात हुई, आपने पहले क्यों नहीं बताया। आज प्रधान मंत्री बार-बार कह रही हैं कि विदेशियों का हाथ है। अगर विदेशियों का हाथ है, बताना चाहिए किस का हाथ है, क्यों नहीं बताते ? (**समय की घंटी**) लेकिन उन्हें झूठ या सच्चाई से मतलब नहीं, उनका केवल एक मतलब है कि आग जलती रहे और हम हाथ तापते रहें।

यह दोहरी नीति नहीं चलेगी। हमारे लिए चण्डीगढ़ पंजाब में जाए या हरियाणा में जाए, पानी इधर जाए कि उधर जाए, इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता जब तक कि वह हिन्दुस्तान के अन्दर है।

मैं पूछना चाहता हूं कि जब शाह कमीशन का फैसला हो गया था तो श्रीमती इन्दिरा गांधी ने फैसले को नहीं माना। अपना एवार्ड दिया। वह भी लागू नहीं किया। क्यों ?

**श्री (मौलाना) असरारुल हक़ :** सौ चूहे खा कर ..... (**व्यवधान**)

†[شری (مولانا) اسرار الحق : سو چوہے کہاکر ......]

**श्री जगदीश प्रसाद माथुर :** इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि छोटी-छोटी बातों को न देखा जाए। बड़े दिमाग लाइये, जैसे हिन्दुस्तान के बड़े देश की सरकार है, ऊंचा दिमाग रखें, बड़े दिमाग रखें। आप डिटरमिंड हो जाइये। अगर अकाली दल बात करने के लिए आता है, आना चाहिए।

मैं अपील करता हूं अकाली नेताओं से कि बात करें। जैसे कई मित्रों ने कहा है अकाली दल की नीयत भी साफ नहीं है (**समय की घंटी**) वह दुनिया भर की मांग करते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि आपकी भी नीयत साफ नहीं है। आपका भी दिल दिमाग साफ नहीं है। आप अपना दिल साफ कर लीजिए, फिर जो हिम्मत के साथ फैसला करना है, करिये। देश के हित में जो ठीक समझते हैं, करिये। फिर देखिए कि देश आपका साथ देगा। आप स्वार्थ को छोड़ कर, छोटी दलगत भावना को छोड़ कर हिम्मत से काम लीजिए।

इतना ही मेरा निवेदन है।

†[ ]Transliteration in Arabic Script.

SHRl HANSRAJ BHARDWAJ (Madhya Pradesh): Madam, Vice-Chair-niaji, 1 am surprised at the dangerous attitude adopted by the Opposition today. ' I have heard all the three speakers now from tfie Opposition. The one representing Janata Party in very clear terms said that A);alis are not responsible in any manner for the violence in Punjab. They are not responsible for the atmosphere of violence which has been created in Punjab. They have not pointed out, the speaker did not point out, as to who are responsible for the violence in Punjab.

AN. HON. MEMBER: You are responsible.

SHRl HANSRAJ BHARDWAJ. The first speaker said that there is no violence in Punjab. Then, Mr. Surjit Spoke. I am greatful to him He has elaborately pointed out that it is not only one foreign country which is involved, but numerous countries are involved in the violence in Punjab, He has said that this destabi-lisation is a continuous process against the Indian nation. The third Member who sPoke right now stands in two places. He is just like a perSon who did some good things as well as some bad thing in his hfe. Then, ultimately, when he stood before the God, God asked him 'You have done some good thing; I now give you a offer; would you like to go to Heaven or you want to go to Hell? He said 'I would like to stay in between so that the customers from both sides can come to me and I can sell my commodity'. These are the people who want to stay in between both the sides. They want to be with the Akalis and still they say that they are keen to solve this problenT. Today, can you deny this fact that the holy places of worship in Punjab have turned into sanctauries of armaments, have turned into hiding places for illicit arms? Is Mr. Surendra Mohan defending this? Is he supporting this? Who are the persons who are harbouring the criminals in these gurudwaras? Can you extend the Gu-rudwara Act to the whole country in such a situation when you have seen that what-ever Gurudwaras which are there in Punjab are used only to harbour criminals? Places of worship have been turned into places for harbouring criminals. I do not think the people of India will agree to such a situation. I myself am a Punjaln. I was educated in Punjab. I learnt Punjabi up to matriculation. But unfortunately, ic is the Akalis who are responsible for turning us out of Punjab . and we are today known as Haryanvis. We never wanted Haryana, as a matter of act at any time. We have lost all the hill stations because of the narrow-mindedness of these people. I can speak Punjabi better than any Akali. But they woukl not allow us to prosper in Punjabi culture and civilisation. This is narrow-mindedness.

You will kindly see that the situation which has been created today in Punjab is aided, abetted and conspired by -,. foreign powers. I was in America and I met about 20 professors from India, people who were there in New York, who were there in Florida, in Boston, in Harvard and so on. They complained to mc that it is the Pakistanis and the Americans jointly who are trying to bribe our people in America as well as in India to raise the bogey of Khalistan. ' Can you deny this fact? Should you not have condemned this? Mr. Mathur shoBkl have condemned this at the outset. He should have said that we condemn those foreign powers who are trying to divide this country, those who want that India should not be strong. This should have been condemned by Mr. Mathur. Should you not take a proper line? You are not taking a patriotic line. Mr. Mathur, your party has been exposed thoroughly. It was the Congress which brought freedom to this country in which Hindus, Muslims, Sikhs and Christians fought together. Today also, they are fighti,ng together. You do not represent that culture. You can say so. Therefore, you kindly forget about this.

AN HON. MEMBER: Mr. Mathur is a good man. ""'

SHRl HANSRAJ BHARDWAJ: It is not a qiiestion whether Mr. Mathur is a good man or a bad man. The questtoo

is, let everybody in this country, let every countryman, know who speaks what. Please be very clear in your lone. You speak in ojie clear tone. You should say whether you support the KVialistan movement, whether you condemn the violence in Punjab or not. This is the question. 1 would have liked today in this House that leaders from all parties made clear their stand on this question before the Chair. But nobody knows today what their stand is. You should be clear in your stand. You condemn our Prinie Minister, our party, our leadership. Our Party's stand has been very clear on this. So far as the religious demands are concerned, they have already been conceded. We respect 'all Gurus, Sikh, Gurus. They are our Gurus. They are not Pakistani Gurus or American Gurus they are our Gurus and we worship them and, therefore, there is no difTiculty.

Then the second thi.ng is about the ■water and territorial disputes. You should not forget that Justice Shah decided the issue. He was equally an important jurist. He decided the issue and these people have not accepted it. Do the Punjabi think that the Supreme Court Judge or the High Court Judge or a tribunal will unite the Punjabis, or one Judge will unite them? If that is so, let them select one. But the question today is of uniting the hearts of the I^injabis. Wc have to find out who is responsible for dividing the hearts of the Punjabis. The mischief has to be nipped and the miscreants have to be nabbed. The miscreants are those who go to the Akalis. who are their companions, who have shared power with them. In 1977 the Janata Government came to power. They had a clear majority, but still Shri Morarji Desai took two Ministers from them. What is this? This is the real relationship, the BJP was sharing power in Punjab with the Akalis. Can you deny this aspect of the matter, Mr. Mathur? You were together in the power and power is the most cementing friendship. Therefore, you must know that people have known you. You were in collaboration with the National Conference in Jamniii and the people have rejected you there because of your dubious game. Therefore, if you are really sincere. if you are veally prepared to solve ibis problem, to restore peace in Punjab, you must unite. As Mr. Surjeet said. this is the time. The question of how much water should go to Punjab and how much water should go to Haryana has to be decided by the two sides. How can the prime Minister say that the Haryana people are not part of India? For Punjab also you cannot say that it is one Sikh Government or Hindu Government. Botli the States have to discuss between thenv selves and decide the issue.

About Chandigarh, we were all educa-ted in Chandigarh. How can you debar us from going to Chandigarh? If you want Chandigarh to be given to Punjab, Harya.na should also be able to tiiild a separate capital. No Haryanvi is very happy to travel 200 miles to Chandigarh and then find no place and come back. All these questions have to be discussed dispassionately but people like you, who do not have a clear stand, cannot give any clue to the solution of the problcnt of Punjab. Haryana and Punjab; they were together. People of the two States are still together, whether they are the Sikhs or the Hindus or the Muslims. J will also tender an apology about the re-inarks of Shri Sukul right now. In India, India is one nation, equally belonging to the Hindus, Sikhs, Christians and Muslims. The Muslims have fought for the coimtry's freedom as much as the Hindus have fought. The Sikhs have equally contributed to the freedom strug- , gle. So, the question today is, who is dividing them? You have said Mr. Surjeet—it is you who is abeting it—Pakistan is equally interested in it because armed Pakistan is always a danger. On the other side they are collaborating to weaken this country and when somebody outside is weaksni.ng the country, the tradition has been in India that we all stand united. That is the moment today. We must strengthen the hands of the prime Minister and the Government. Those who blame the Government, are jiot true to their conscience. They must; do some heart-searching. Therefore.

[Shri Hansraj Bharadwaj]

today is the moment when we should unequivocally condemn and say that no criminal should be harboured in any temple, in any gunidwara^ in any mosque. Today I am reminded of one couplet from Jigar and I quote:

All the sacred places, whether they were the churches in Assam or the mosques or the temples or the guruwaras, are harbouring criminals. God is supposed to live there. The sanctity of these places has to be maintained. We cannot really tolerate this thing. I would have loved if the Government would have taken stern action against such people and taken them out of these places in order to maintain the sanctity of our religion, of our gurus, of our other things. But that is not happening. Government vwll kindly consider all these aspects. All the people are looking towards Punjab. , Today those who are speaking in this House, the nation is going to read their mind. They cannot simply get away by saying that the Prime Minister is not solving this problem. It is not correct to say that it is the problem of the Prime Minister or the problem of the Congress(l) or the problem of the Home Minister. It is the problem of everyone of us who is a political thinker^ who is a politician or a social worker. Even an ordinary citi» zen has to contribute to this. The Supreme Court or the High Court cannot bring normalcy in Punjab. We can accommodate each other and in that process it is the duty of every citizen to strengthen the hands of the Piime Mmister. Thank you.

**श्री सत्यपाल मलिक** (उत्तर प्रदेश) : महोदया, माननीय गृह मंत्री जी का जो बयान है, उन्होंने कुछ मेहरबानी हम लोगों पर की है वरना जो पिछले दिनों से आदरणीया प्रधान मंत्री जी के भाषण जो इस देश में हो रहे हैं उनसे तो सारी जिम्मेदारी पंजाब ... के लिए हमारे विरोधी दलों पर ही आ जाती है जब कि यह सच है कि विरोधी दलों ने इस मामले में बहुत ही कंस्ट्रक्टिव रोल अदा किया और खास तौर से हमारी पार्टी के लीडर, हमारी पार्टी के अध्यक्ष ने औरों से हट कर कई मामलों में आपको सख्त कदम उठाने के लिए कहा और उसमें सहयोग देने की अपील की। लेकिन आपके बयानात इस बात को साबित करते हैं कि आप पंजाब के मामलों पर राष्ट्रीय दृष्टि से नहीं देख रहे हैं। मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ यह इल्जाम लगाना चाहता हूं कि आप और अकाली दोनों राजनीति के लिए इस झगड़े को लम्बा चलाना चाहते हैं। आप राजनीति के लिए इस देश के टूटने की जमीन तैयार करना चाहते हैं। हम आप को सहयोग देने के लिए तैयार थे, लेकिन जो आपका रवैया है उसको देख कर बहुत तकलीफ होती है। मैं आपको श्री दुष्यन्त कुमार का एक शेर सुनाना चाहता हूं जो बेहतरीन शायरों में से हैं, लेकिन अब नहीं रहे —

"उनकी अपील है कि उन्हें हम मदद करें,
चाकू की पसलियों से गुजारिश तो देखिए।"

श्रीमन्, आजादी के बाद, मैं इस बात की बहस में नहीं पड़ता हूं कि आपकी पार्टी से बोलने वालों ने भारत माता का नाम लिया लेकिन, भारत माता का हाथ पैर कटा हो तो उसके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं, आप जिम्मेदार हैं। हमारी पीढ़ी के लोग जिम्मेदार नहीं हैं, पुरानी पीढ़ी के लोग जिम्मेदार हैं। लेकिन आजादी के बाद जो लोग देश की तामीर करने में लगे हुए हैं, उन्होंने देश के बंटवारे से सबक नहीं लिया। आपने कोई सबक महात्मा गांधी के कत्ल से नहीं लिया। महात्मा गांधी के कत्ल होने के दो महीने बाद संविधान सभा प्रस्ताव पास करती है कि इस देश में जो संगठन धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर इकट्ठा होते हों, और

दूसरे वर्ग के देश के लोगों को उसमें शरीक न करते हों उनको राजनीति में हिस्सेदारी न करने दी जाए । उसके बाद मुस्लिम लीग के साथ सरकार आप बना लेते हो । अकाली दल के साथ सरकार बना लेते हो । गांधी के हत्यारों का देश में कुछ नहीं बिगड़ता है । तमाम लोग धर्म, सम्प्रदाय और जातिवाद की ज्वाला में उसी तरह से जलते हैं । 1959 में लोक सभा में जवाहरलाल नेहरू से पूछा जाता है कि तुमने मुस्लिम लीग के साथ क्यों सांठ-गांठ की है, तो जवाहरलाल जी कहते हैं कि यह नई मुस्लिम लीग है, यह वह मुस्लिम लीग नहीं है । इसी तरह से हिन्दुओं के सांप्रदायिक संगठनों, विदेशी क्रिश्चियन मिशनरियों के संगठन जो गलत काम कर रहे थे उन तमाम के ऊपर आपकी तरफ से कोई पाबन्दी नहीं लगती है और आप चुनाव में, राजनीति में और तमाम कामों में सारे संप्रदायों की गन्दगी को बहने देते हैं । मुसलमानों की नई पीढ़ी पाकिस्तान का बोझ कंधों पर नहीं उठा रही थी। सिक्खों के वह जवान जो 1947 से पहले क्या चाहते थे, जो सिख, मुस्लिम, इसाई और हिन्दू लड़के साथ साथ पढ़ते थे, साथ-साथ रहते थे, जिनके अन्दर कभी जिरह नहीं होती थी कि तुम किस सम्प्रदाय के हो, आज वह एक दूसरे पर शक करते हैं । मेरी पत्नी सिक्ख है, मेरी दो बहनें सिक्खों में ब्याही हैं, लेकिन आप ने देश के लिए यह झगड़ा पैदा किया । जिस वक्त अकालियों की सरकार वहां थी, तब यह मामला क्यों नहीं उठा ? जिस वक्त अकाली यहां सरकार में थे, उस समय गंगासिंह ढिल्लों आया, जिस सम्मेलन में उन्होंने तकरीर की, उसमें उन नेताओं का वर्चस्व प्राप्त था । भिंडरावालां किसकी पैदायश है ? इसके बारे में बहस की जरूरत नहीं है । दरबारासिंह आजादी की लड़ाई के सिपाही हैं, लेकिन वह ऐक्सट्रीमिस्ट्स से लड़ना चाहते थे, लेकिन रोज दिल्ली में बैठे हुए आपकी पार्टी के लोग उसको जलील करते हैं । डी० आई० जी० अटवाल का 101वां कत्ल हुआ, लेकिन इसके लिए चार्ज शीट दाखिल नहीं हुई है । इसके लिए आप जिम्मेदार हैं । अपोजिशन के लोग जिम्मेदार नहीं हैं । आप गरीबी हटाओ के नारे पर एक बार जीतकर आ चुके हैं हमारी गलती से दूसरी बार, लेकिन तीसरी बार आने का सवाल है । इसके लिए फिर सारे मुल्क को बरबाद करना चाहते हो ।

मैं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं कि इस देश में खालिस्तान को चाहने वाले आज बड़ी तादाद में नहीं हैं । कोई अगर यह कहता है कि पंजाब के सारे सिख खालिस्तान चाहते हैं तो यह कह कर वह गलती करेगा । लेकिन आप चाहते हैं । मैं ऐसा मानता हूं कि अकालियों ने जो सबसे बड़ी गलती की है हमारी पार्टी ने हमारे नेताओं ने उनकी उस गलती के लिए उनको कभी बख्शा नहीं है । हमारे नेता ने डी० आई०जी० श्री अटवाल के मरने के बाद एक चिट्ठी लिखी थी कि गुरुद्वारों में पुलिस जा सकती है । हम यह जानते हैं कि, कोई तीर्थ स्थान, कोई मन्दिर, मस्जिद गुरुद्वारा, गिरजा इस देश का इतना पवित्र नहीं है कि कत्ल करके कातिल उसमें बैठ जाए और उसकी गिरफ्तारी न हो । लेकिन जब हमारे नेता लिखते हैं तो उसके जवाब में माननीय प्रधान मंत्री लिखती हैं कि ऐसा करने से एक सम्प्रदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचेगी । आपको शिकायत किस बात की है । आप करना कुछ नहीं चाहते । लेकिन इल्जाम हमारे ऊपर लगाते हैं । माननीया, इस बीच कोई मुकदमा दर्ज नहीं होता । हम यह मानते हैं कि यहां मोडरेट्स भी हैं और एक्स्ट्रीमिस्ट भी हैं । लेकिन जो गलत काम है उसके लिए हम किसी को माफ नहीं करने वाले हैं। हमारी पार्टी ने बार-बार कहा है कि हम किलिंग की निन्दा करते हैं । हम चाहते हैं कि

[श्री सत्यपाल मलिक]

अकाली दल जो कुछ पंजाब में हो रहा है उसकी निन्दा करे। गिरफ्तारी करने के लिए गुरुद्वारों में पुलिस भेजी जा सकती है। सख्ती होनी चाहिए और अकालियों की जो गैर-वाजिब मांगें हैं हम उनके साथ नहीं हैं, यह हम कहना चाहते हैं। हम हरियाणा के साथ ज्यादती के खिलाफ हैं। हरियाणा को ज्यादती के साथ हम खड़े रहें यह हमारी राय है। इसमें सबसे ज्यादा नुकसान हरियाणा को है। हरियाणा के पास कोई लीडरशिप नहीं है। नालायक और कमजोर लीडरशिप है। इसलिए सारे मामले में हरियाणा के साथ ज्यादती है। हम इस मामले में उनके साथ हैं। लेकिन आप, कुछ नहीं करना चाहते। हमारा निवेदन यह है कि जो खालिस्तान को चाहने वाले लोग हैं या एक्स्ट्रीमिस्ट हैं उनके साथ आप यह गलती न करें कि सारे पंजाब के सिखों को जोड़ दें। हिंदुओं में भी नालायक लोग हैं। चौधरी छोटूराम जैसी महान हस्ती ने जिन्हा साहब को लाहौर से वापस कर दिया था। उन हिन्दुओं द्वारा उस के लिए उसकी जिंदगी में बराबर छोटू खां नाम लिखा जाया करता था। सभी फिरकों में सभी तरह के लोग हैं लेकिन आपकी नीतियां और आपने जानबूझ कर अपने हिंदुओं की कियादत उन नालायकों को दे दी है और सिखों की कियादत खालिस्तान चाहने वाले एक्स्ट्रीमिस्ट एलीमेंट को दे दी है। मसला हल हो सकता था और अब भी मसला हल हो सकेगा-मगर मसला हल हो गया तो चुनाव किस बात पर लड़ा जायेगा। अकालियों की एक अजीब स्थिति है। आज अकालियों की मांगें अगर मान ली जाती हैं तो परसों पता नहीं कोई नया संत खड़ा हो हो जायेगा और कहेगा कि मैं जल जाऊंगा अगर मेरी फलां-फलां मांग नहीं मानी जायेगी। कांग्रेस उसको हवा दे देगी। जो तथाकथित मोडरेट्स हैं उनको फिर आंदोलन में कूदना होगा, फिर लड़ाई खड़ी हो जायेगी अकाली अपनी राजनीति के लिये और आप अपनी राजनीति के लिये पंजाब को और सारे देश को कम्युनल लाइन पर डिवाइड कर रहे हैं। इस देश को तोड़ना चाहते हैं। मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं।

माननीय गृह मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि 1970 का एवार्ड हो गया था। उसके बाद जो डिस्प्यूटिड एरिया थे उस पर कमीशन आपने बैठाया था या हमने बैठाया था। आपने बैठाना था तो क्यों नहीं बैठाया। आज जो यथास्थिति पैदा हो रही है उसके चलते फायदा किस को है। आपको है अकालियों को है। हरियाणा को एस वाई एल के न बनने वजह से लिंक न बनने की वजह से एक बूंद पानी नहीं मिल रहा है। पंजाब को पानी मिल रहा है। पंजाब को कोई दिक्कत नहीं है। दिक्कत है तो हरियाणा को। फाजिल्का और आबोहर आज पंजाब के पास है। पंजाब को कोई परेशानी नहीं है। अगर परेशानी है तो हरियाणा को है। लेकिन मैंने कहा कि हरियाणा में कोई लीडरशिप कांग्रेस की नहीं है। हमारे करने से कुछ होने वाला नहीं है हमारी नियत यह नहीं है कि हरियाणा को किसी कम्युनल लाइन पर पंजाब के खिलाफ खड़ा करें या अकालियों के खिलाफ खड़ा करें। इसका नजायज फायदा उठा कर आप हरियाणा के हितों के साथ ज्यादती कर रहे हैं। अजीब बात यह है कि जब फैसले की बात चलती है तो बाकियों से मश्विरा होता है और हरियाणा के चीफ मिनिस्टर को हुक्म दिया जाता है। हम इसका विरोध करते हैं। कुल मिलाकर

यह कहना चाहते हैं कि आपने सारे देश में यह फिजा पैदा करने की कोशिश की कि देश को खतरा है, हम इस बात से हटते नहीं है कि देश को खतरा है। जो सच बात है उसको हम मानेंगे। हमारी पार्टी के लीडरों ने माना है। जिम्मेदारी के साथ मैं कहता हूं कि अमेरिका जो सिर्फ 10 हजार सिपाही हैं फिलिस्तीनी मुक्ती मोर्चा के और जिनके पास अपनी दो गज जमीन नहीं है अपने दफन होने के लिये उस 10 हजार फिलिस्तीनी मुक्ती मोर्चा को बर्दाश्त नहीं करता तो क्या वह 60 करोड़ हिंदुस्तानियों को बर्दाश्त करेगा? अमेरिका पूरी जिम्मेदारी के साथ इस मुल्क को तोड़ना चाहता है। हम आपके साथ सहमत हैं कि यह सच है कि पाकिस्तान इस सारे मामले को बढ़ा कर हमारे देश को तोड़ना चाहता है।

यह भी सच है कि यह सारा आंदोलन कुछ तत्वों द्वारा चलाया जा रहा है जिनका सम्पर्क पाकिस्तान और अमेरिका के साथ है। लेकिन आपका बोलने का जो अंदाज है उससे ऐसा लगता है कि सारी सिख कौम इसमें है। ऐसी हालत पैदा करनी चाहती है जो संकट देश का नहीं है, यह संकट सीमाओं तक ही नहीं है बल्कि एक बहुत बड़ा संकट पैदा करके आप इस देश में दुबारा हीरो बनना चाहते हैं। सारे देश के लिए खतरनाक चीज पैदा करके उसकी रोजी और रोटी के सवाल को अलग करके, समाज व्यवस्था को बदलने के सवाल को अलग करके, आप चाहते हैं कि सारा मुल्क आपके पीछे लगा रहे। आप यह डर पैदा करना चाहते हैं कि देश टूट रहा है। इस प्रकार से आप एक चुनाव तो जीत सकते हैं। हमारी गलतियों की वजह से या अकालियों की बेवकूफी की वजह से—मैं यहां पर यह शब्द इस्तेमाल करने के लिए मजबूर हूं और उनके रवैये की पूरी तरह से निंदा करता हूं। वे अपने आप को एक्सट्रीमिस्टस् से अलग नहीं कर सके। मैं मानता हूं कि कि उनमें अच्छे लोग भी हैं। लेकिन वे उग्रवादियों से अपने को अलग नहीं कर सके। मैं यह कहना चाहता हूं कि सेठी साहब, आप एक चुनाव जीतने के बाद उस पर मुक्कमल तौर पर शासन नहीं कर सकते हैं। मैं बहुत अदब के साथ कहना चाहता हूं कि मुल्क के सामने यह सवाल नहीं है कि इंदिरा जी प्रधान मंत्री रहें या कोई दूसरा प्रधान मंत्री रहे। अगर इस मुल्क की एकता को कायम रखने के लिए यह भी लिखवाना जरूरी हो कि इंदिराजी के बाद श्री राजीव गांधी प्रधान मंत्री होंगे तो हमारी पार्टी यह लिखने के लिए तैयार है, लेकिन देश की अखण्डता को कायम रखा जाना चाहिए। हमारे देश की जनता नालायक सरकार को बर्दाश्त कर सकती है, लेकिन इस देश को टूटने नहीं दे सकती। उसके लिए वह हर कुरबानी को देने के लिए तैयार है। आप चालाकी से इस देश को नहीं चला सकते। आप इस देश में अमेरिका और पाकिस्तान के इंटरफेयरेन्स का डर पैदा करके समस्याओं को हल नहीं कर सकते हैं। आप देश में एक नकली संकट पैदा करना चाहते हैं। मैं यह साफ कहना चाहता हूं कि अगर देश टूट जाएगा, देश का एक भाग टूट जाएगा तो आपके हाथ में सिर्फ प्रशासन और पुलिस ही रह जाएगी। सारा देश आपके इशारों पर नहीं चल सकता है। प्रधान मंत्री कोई भी हो यह बड़ी बात नहीं है। दुनिया में लायक प्रधान मंत्री भी हुए हैं और नालायक प्रधान मंत्री भी हुए हैं। इतिहास इन बातों का हर क्षण गवाह रहता है। आने वाली नस्लें हमें अपने पैमाने से देखेंगी। इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आप पंजाब के सम्बन्ध

[श्री सत्यपाल मलिक]

में अपने बातचीत के लहजे को बदलिये । गालियां देने से काम नहीं चलने वाला है । आप ईमानदारी के साथ इन समस्याओं का समाधान कीजिये । अगर आप साम्प्रदायिक तत्वों और संगठनों के खिलाफ कार्यवाही करेंगे, उग्रवादियों के साथ सख्ती से पेश आने का फैसला करेंगे, अलगाव-वादी तत्वों के खिलाफ कार्यवाही करेंगे तो सब लोग आपके साथ सहयोग करेंगे । लेकिन अगर आप वोट प्राप्त करने के लिए, चुनाव लड़ने के लिए, मुल्क को तोड़ने के लिए कोई कोशिश करेंगे तो उसका हम सब विरोध करेंगे । इतना ही कह कर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं ।

**श्री सुलतान सिंह** (हरियाणा) : उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो म अपने लायक दोस्त मलिक साहब का शुक्रिया अदा करता हूं कि उन्होंने हरियाणा के कॉज की वकालत की । लेकिन साथ-साथ मैं उनसे एक दर्खास्त भी करना चाहता हूं कि वे इस बात का भूल गये कि सन् 1977 में अकाली पार्टी का जो मैनीफेस्टो था उसमें मैन जो बातें थी वे सब आनन्दपुर साहब के रिजोल्यूशन की थी । आनन्दपुर साहब के रिजोल्यूशन को अपने मैनीफेस्टो में रख कर अकाली पार्टी चुनाव जीत कर आई थी । मलिक साहब को याद होगा कि बाबू जगजीवन राम जी की जो सी० एफ० डी० थी जब मंत्रिमण्डल बनने लगा तो चौधरी साहब ने एक शर्त रखी कि बाबू जगजीवन राम जब तक सी० एफ० डी० को नहीं तोड़ते हैं, इनको केबिनेट में नहीं शामिल किया जाएगा । और दूसरी शर्त यह रखी कि जो अकाली पार्टी आनन्दपुर साहब रेजोल्यूशन पर जीतकर आई है वह अकाली पार्टी के तौर पर रहेगी । सरदार प्रकाश सिंह बादल और धन्नासिंह गुलशन 1977 की जनता पार्टी की सरकार में मिनिस्टर बने । दोनों को मिनिस्टर बनाने में सब से बड़ा हाथ चौधरी चरण सिंह का था । उन्होंने अकाली पार्टी को यह नहीं कहा कि वह अकाली पार्टी को तोड़कर जनता पार्टी में आ जायं और जो अकाली पार्टी आनन्दपुर साहब रेजोल्यूशन जीतकर आई थी और जिसके अन्दर स्टेट अटोनमी वे मांग रहे थे, उनको उन्होंने अपनी सरकार में शामिल किया । इसके साथ-साथ हमारी विरोधी दल के भाई बार-बार जिक्र करते हैं कि कांग्रेस मामले को उलझाना चाह रही है । सुरजीत साहब बैठे हैं । यहां पर और भी बहुत सारे पुराने साथी हैं । सरदार खुशवन्त सिंह बैठे हैं । अमृतसर के अन्दर कांग्रेस का सैशन हुआ 1956 में और उस वक्त वहां अकाली पार्टी का सैशन भी था और उसी जगह जनसंघ का सैशन भी था और सारा अमृतसर तीन दिनों तक जलूसों का केन्द्र बन गया था । कांग्रेस का जलूस दो मील लम्बा तो अकाली पार्टी का चार मील लम्बा और इसी तरीके से जनसंघ वाले महा पंजाब का नारा लगाते थे और अकाली दल पंजाब स्टेट का नारा लगाते थे । वहां पर उन सारे सेशनों के बाद एक फैसला हुआ और वह यह फैसला हुआ कि दो रीजनल कमेटियां बनेंगीं, एक पंजाबी रीजन और एक हिन्दी रीजन और वहां पर यह लैंग्वेज फार्मूला रखा कि पंजाबी रीजन में डिस्ट्रिक्ट लेबल पर पंजाबी रहेगी और बच्चों का जो माध्यम पढ़ाई का पहली जमात से होगा वह पंजाबी में होगा और जो हिन्दी रीजन है उसको डिस्ट्रिक्ट लेवल पर भाषा हिन्दी होगी और वहां जो बच्चों की पढ़ाई होगी वह पहली जमात से हिन्दी में होगी । कांग्रेस ने इस बात को माना और अकालियों के साथ समझौता किया और अकाली कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए । हमने उनको अकाली कह कर टिकट नहीं दिये । आप लोगों ने अकाली रख कर उनको मिनिस्टर बनाया । उनको हमने कहा कि भई यह नीली पगड़ी बदल कर सफेद पगड़ी बांधों, गांधी

भंडार से खद्दर की पहनो और कांग्रेस के मैम्बर बन जाओ और हमारे सिद्धान्तों को मानो। इसका नतीजा यह हुआ कि ज्ञानी करतारसिंह और ज्ञानसिंह राड़ेवाला कांग्रेस सरकार में कैबिनेट मंत्री बने, बाकायदा कांग्रेस का फार्म भर कर मिनिस्टर बने। आपकी तरह नहीं कि अकाली रख कर मिनिस्टर बनाया। पहले वे कांग्रेसी बने और फिर मिनिस्टर बनाया। इसके साथ-साथ 1956 में रीजनल फार्मूला बना और रीजनल फार्मूला बनते ही अकालियों ने डिमांड शुरू कर दी पंजाब स्टेट की। जनवरी 1966 को पंजाब सूबा मान लिया और पंजाबी सूबा बनने के बाद एक बाउण्ड्री कमीशन बैठा, शाह कमीशन। शाह कमीशन आपके लिए भगवान है। आप सारे शाह कमीशन को बहुत अच्छा मानते हैं सारे विरोधी दल वाले। उस शाह को जिसको आप अपना भगवान मानते हो उसका कमीशन बनाया, बाउण्ड्री कमीशन। उस शाह कमीशन की रिपोर्ट आई कि चंडीगढ़ हरियाणा को जाय इन्क्लूडिंग खर्ड और बाकी जो हिन्दी रीजन है वह हरियाणा का है और जो पंजाबी रीजन है वह पंजाब का है। उस रिपोर्ट को किसने इंकार किया? जो आज कहते हैं कि वाटर कमीशन बिठाओ, बाउण्ड्री कमीशन बिठाओ। उस कमीशन की रिपोर्ट को इन्कार किया अकाली पार्टी ने और उसका नतीजा क्या निकला? उस हर्ड के इलाके को उस वक्त माइनस कर दिया और चंडीगढ़ को यूनियन टैरीटरी बना कर अंडर डिस्प्यूट छोड़ दिया। फिर दर्शनसिंह फेरूमान एक बहुत बड़े देशभक्त थे उन्होंने अपनी जान दे दी, शहीद हो गए संत फतेह सिंह जी ने कहा कि मैं जल कर मर जाऊंगा अगर चंडीगढ़ पंजाब को न दिया जाये।

5 P. M.

इन्दिरा जी ने पंजाब को चण्डीगढ़ दिया संत फतेह सिंह की जान बचाने के लिए। उसका नतीजा क्या निकला। हरियाणा के अन्दर 12 लोग गोली से मारे गये एजीटेशन करते हुए और पंजाब के अन्दर दीवालीं मनाई गई और उसी फैसले में यह लिखा था कि चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जाएगा और फाजिल्का और अबोहर हरियाणा को। आप बताइये कि इस फैसले से किसने इन्कार किया? थोड़े दिन के बाद अकाली फिर मुकर गये। फिर रावी-ब्यास का पानी क्योंकि इंडस ट्रीटी 1970 में एक्सपायर हो गई इसलिए जो पानी पाकिस्तान को जाता था वह बन्द हो गया और हिन्दुस्तान की प्रधान मंत्री ने यह फैसला कर दिया कि 3.5 मिलियन एकड़ फुट पानी हरियाणा को मिलेगा और 3.5 मिलियन एकड़ फुट पानी पंजाब को मिलेगा और जो पानी पाकिस्तान में जाता था उसका बंटवारा किया। उस फैसले को दोनों सरकारों ने मान लिया। लोगों की चुनी हुई सरकारों ने मान लिया। पंजाब में भी लोगों की चुनी हुई सरकार है उसने उस फैसले को मान लिया और लोगों की चुनी हुई सरकार जो हरियाणा में है उसने भी मान लिया लेकिन अकाली उस फैसले को नहीं मानते। आप ईमानदारी से बताइये विरोधी दलों के लोग यहां पर बैठे हैं, क्या अकालियों की कोई रिप्रेजेंटेटिव केपेसिटी पंजाब में है? क्या वह चुने हुए लोग हैं, पालिया-मेंट के अन्दर 13 सीटों में से 12 सीटें कांग्रेस के लोग जीत कर आए? पंजाब के अन्दर कांग्रेस की सरकार है चुनी हुई सरकार है लोगों के चुने हुए नुमाइंदे जिस फैसले को मानते हैं उस को चंद अकाली नहीं मानते और आप उनका समर्थन कर रहे हैं। आग आप लगाना चाहते हैं या बुझाना चाहते हैं पहले इस बात को खुद आप सोच लें। आपने मीटिंग की। कितनी बार विरोधी दलों की मीटिंग हुई है। मुझे ताज्जुब हुआ जहां मलिक साहब का मैं शुक्रिया अदा करता हूं वहां एक बात का गिला भी है। चौधरी

[श्री सुलतान सिंह]

चरण सिंह को जब विजयवाड़ा कनक्लेव में इनवाइट किया गया तो उन्होंने कहा कि जहां रीजनल पार्टियां इकट्ठा होंगी मैं वहां नहीं जाऊंगा । हम सब लोगों ने बड़ी बढ़ाई की । बदकिस्मती से दो खत लिख दिये चौधरी चरण सिंह अकालियों को मुखालफत करते हैं, आपको गोली से मारा जाएगा । दो खत मिलने ही तब वह उनकी कनक्लेव में चले गये । वहां बलवन्त सिंह और प्रकाश सिंह बादल बैठे हुए थे । मेरी बात गलत हो तो मैं वापिस लेने के लिए तैयार हूं । उसी रामाराव ने विजयवाड़ा में बुलाया तो चौधरी साहब नहीं गये और वही रामाराव चौधरी साहब का कान पकड़ कर ले गये आज आप कहते हैं कि चौधरी साहब ने ...

**श्री सत्यपाल मलिक** : मैं ओब्जेक्शन करता हूं आपको भाषा पर । यह मुझ को प्रोवोक करना चाहते हैं कि अकालियों को धमकी की वजह से चौधरी चरण सिंह चले गये । मैं कोई सख्त बात कहूं । मैं एक स्पष्टीकरण करना चाहता हूं । विजयवाड़ा कनक्लेव में हमारी पार्टी गई, हमारी पार्टी का जनरल सेक्रेटरी गया । दिल्ली की कनक्लेव में हमारा यह ओब्जेक्शन था कि हम सिर्फ पंजाब की समस्या पर जो कनक्लेव बहुगुणा जी ने बुलाई है उसमें नहीं जाएंगे । जब एन० टी० रामाराव ने कहा कि यह बहुगुणा की कान्फ्रेन्स खत्म और यह नये सिरे से कान्फ्रेंस जो है यह विजयवाड़ा का एक्सटेंशन है मैं इसको चलाऊंगा और मैं पंजाब के मामले में जो आपके व्यूज हैं उनको इंडोर्स करूंगा तब चौधरी चरण सिंह गये और अगले दिन एन० टी० रामाराव ने प्रेस कान्फ्रेन्स करके पंजाब के मामले में जो चौधरी चरण सिंह की राय है उसको इंडोर्स किया ।

**श्री जगदीश प्रसाद माथुर** : एक बात आप गलती से कह गये, कान पकड़ कर ले गये वह निकाल दीजिए, एक समझदार आदमी ऐसी बात नहीं कहता । यह कहना कि चौधरी साहब को कान पकड़ कर ले गये, अच्छा नहीं लगता । (**व्यवधान**)

**श्री सुलतान सिंह** : मैंने कोई गलत बात नहीं की है । यह नहीं कि मैं चौधरी साहब की इज्जत घटाना चाहता हूं । मेरे दिल में उनके प्रति बड़ी इज्जत है लेकिन मैंने एक फैक्ट बता दिया है ।

**श्री रामेश्वर सिंह** (उत्तर प्रदेश) : आपने वह शब्द वापिस लिया है या नहीं ?

**श्री सुलतान सिंह** : रामेश्वर सिंह जी, आप एक बात सुन लीजिए । चौधरी साहब उस मीटिंग में बैठे । जहां अकाली मौजूद थे, जहां बलवन्त सिंह मौजूद था, जहां प्रकाश सिंह बादल मौजूद था जिस कनक्लेव में प्रस्ताव पास किया लेकिन चौधरी चरण सिंह ने वाक आऊट नहीं किया । यह फैक्ट है ।

**श्री सत्यपाल मलिक** : अकाली कोई विदेशी नहीं हैं । हम विपक्षी वार्ता में उनके साथ बैठे हैं ... (**व्यवधान**)

**श्री रामेश्वर सिंह** : आपने कहा था कि "कान पकड़ने" की बात जो कहते हैं, अगर यह असंसदीय है तो हम वापस लेते हैं । मैं मानता हूं कि वह उन्होंने वापस ले लिया ।

**श्री सुलतान सिंह** : ले लिया है ।

**उपसभाध्यक्ष [डा० (श्रीमती) नाजमा हेपतुल्ला]** : ले लिया है, आप बैठ जाइये ।

**श्री रामेश्वर सिंह :** मेरा कहना है कि हमारा यह कंडीशन था हम उस कंडीशन में हैं कि अकाली दल यह निन्दा करेगा कि हम निन्दा को नापसद करते हैं । पहली बात तो यह है कि आप इसको गलत ढंग से सदन में मत रखिए। श्री सत्यपाल मल्लिक ने इस बात को बता दिया है कि हमारा उसमें कंडीशन था और अकाली कोई बाहर के नहीं हैं ... (**व्यवधान**) तो निश्चित रूप से देश का विभाजन होगा, उसको आप नहीं रोक सकते हैं। अकालियों के साथ आपको हमदर्दी का एटीट्यूट लेना होगा । अकालियों को देश के अन्दर समझना होगा और भिंडरवाला जैसे लोगों को जो अराजकता की बात करते हैं जो देश को तोड़ने की बात करते हैं, वह कहते हैं कि ... (**व्यवधान**) उनके खिलाफ एक नफरत का ... (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष [डा० (श्रीमती) **नाजमा हेपतुल्ला**] : आप बैठ जाइये । उनको अब न लिखें । अगर वह कहना न मानें तो न लिखें ।

**श्री रामेश्वर सिंह :** *

**उपसभाध्यक्ष [डा० (श्रीमती) नाजमा हेपतुल्ला ]** : बेकार है, आपका कुछ लिखा नहीं जायेगा । कोई फायदा नहीं है ।

**श्री सुलतान सिंह :** मेरे दिल में चौधरी साहब की बड़ी इज्जत है । अगर ऐसी कोई बात है तो मैं वापस ले लेता हूं । लेकिन म एक बात कहता हूं . . . (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष [डा० (श्रीमती) **नाजमा** हेपतुल्ला] : ले लिया है ।

*Not recorded.

**श्री सुलतान सिंह :** मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि आज विरोधी दल वाले बार-बार जो कहते हैं कि इंदिरा गांधी फैसले को बाहर रखना चाहती हैं, आप यह तो बता दीजिए कि कौन-सा इशु ऐसा है जिसका इंदिरा जी ने फैसला नहीं किया हो। चंडीगढ़ फाजिल्का विभाजन का फैसला किया, रावी ब्यास के पानी का फैसला कर दिया और फैसला कौन-सा बाकी है जिसके लिए आप बार-बार कहते हैं कि इंदिरा गांधी उन्हें बाहर रखना चाहती हैं। उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं एक बात का गिला करता हूं आपोजीशन के लोगों से कि जहां बार-बार मीटिंग करके यह कहते हो कि चंडीगढ़ पंजाब में जाना चाहिए वहां आज तक आपने एक भी प्रस्ताव में यह नहीं कहा कि फाजिल्का, अबोहर हरियाणा को जाना चाहिए और इसके साथ साथ मैं यह भी कहे बगैर नहीं रह सकता और आप सच मानेंगे इस बात को कि चौधरी साहब ने एक बार नहीं बार बार कहा है कि मैं हरियाणा के एक्जिस्टेंस के खिलाफ हूं मैं नहीं चाहता था कि यह पंजाब का बंटवारा हो ।

**श्री सत्यपाल मलिक :** चौधरी चरण सिंह जी ने कहा कि मैं पंजाब के बंटवारे के खिलफ था ... (**व्यवधान**) इसका यह मतलब नहीं होता है ।

इसके माने यह है कि आपने मजहब और भाषा के आधार पर सूबे बनाने की शुरुआत की, आपने भाषा और सम्प्रदाय के आधार पर सूबे बनाये ... (**व्यवधान**)

**श्री रामेश्वर सिंह :** एक मिनट मेरी बात सुनिये । क्योंकि यह अहम बहस हो रही है । यह बहस दूसरी तरफ मुड़ रही है । हम लोग पंजाब के बंटवारे के खिलाफ थे । हम लोगों ने बराबर विरोध किया उस वक्त हम लोकदल में नहीं थे, उस वक

[श्री रामेश्वर सिंह]

लोकदल का वजूद नहीं था । मैं उस वक्त संयुक्त समाजवादी दल में था । राजनारायण जी उस समय सदन के मेम्बर थे । आप सुन लीजिए. . . ( **व्यवधान**) चौधरी चरण सिंह जी ने कहा कि पंजाब का बंटवारा बुनियादी तौर पर गलत हो रहा है । पंजाब का अगर बंटवारा न हुआ होता तो आज देश की यह हालत नहीं हुई होती । आज पंजाब में जो कुछ भी हो रहा है वह कांग्रेस पार्टी की देन है । (**व्यवधान**) जिस मुस्लिम लीग ने देश का बंटवारा कराया, उसके साथ आपने सरकार बनाई । आपने कौन सा ऐसा काम किया जिससे . . . (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष [डा० (श्रीमती) नाजमा हेपतुल्ला] : यहां डिसकशन हो रहा है उस स्टेटमेंट के ऊपर जो होम मिनिस्टर ने दिया है, यहां चौधरी चरण सिंह के ऊपर डिसकशन नहीं हो रहा है कि उन्होंने क्या कहा, क्या नहीं कहा (**व्यवधान**) ।

**श्री रामेश्वर सिंह** : चरण सिंह ही एक ऐसे आदमी हैं जिन्होंने हिम्मत के साथ इस बात को कहा है और इस पार्टी की सरकार में कोई आदमी नहीं है. . . . । हमने कहा है कि धर्मस्थल देश में बराबर ही हैं और धर्मस्थल में अगर कोई दूसरा रहता है और देश के बंटवारे की बात करता है, देश को तोड़ने की बात करता है, तो उस धर्मस्थल पर पुलिस को भेजो . . . (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष [डा० (श्रीमती) नाजमा हेपतुल्ला] : अब आप अपने भाषण को खत्म कीजिए ।

**श्री रामेश्वर सिंह** : : काहे के लिए पुलिस को रखा, क्यों नहीं भिंडरेवाला को गिरफ्तार करते हो, बल्कि आप चाहते हो कि यह स्थिति बनी रहे और देश का बंटवारा हो, आप ऐसा चाहते हैं ।

**श्री सुलतान सिंह** : उपसभाध्यक्षा महोदया मैं तो अर्ज कर रहा था और मैं इस बात पर फिर गिला करता हूं कि मेरे अपोजीशन के दोस्त ठंडे दिल से यह सोचें कि हरियाणा के लोग भी इस देश के व्यक्ति हैं । आप यह न समझें कि खाली अकाली ही इस देश के वासी हैं, हरियाणा के लोग इस देश के वासी नहीं हैं । मुझे ताज्जुब होता है . . . (**व्यवधान**)

**श्री रामेश्वर सिंह** : यह तो आप सोचें । . . . (**व्यवधान**) ।

**श्री सुलतान सिंह** : मैं तो अर्ज कर रहा हूं . . . (**व्यवधान**) ।

**श्री रामेश्वर सिंह** : आप एक मिनट रुकिये । उपसभाध्यक्षा महोदया. . . (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष [डा० (श्रीमती) नाजमा हेपतुल्ला] : नहीं रुकेंगे ।

**श्री रामेश्वर सिंह** : सेठी जी ने इसी सदन में कहा था---आप सुनिए उपसभाध्यक्षा महोदया एक मिनट के लिए ।

उपसभाध्यक्ष [ड.० (श्रीमती नाजमा हेपतुल्ला] : नहीं मैं नहीं सुनूंगी ।

**श्री रामेश्वर सिंह** : हम कहते हैं कि सरकार ने इस स्थिति को कायम किया है ।

उपसभाध्यक्ष [डा० (श्रीमती) नाजमा हेपतुल्ला] : अब आप खत्म करें । अब आप बैठ जाइये ।

**श्री सुलतान सिंह** : तो मैं अपने अपोजीशन भाइयों से एक ही प्रार्थना करता हूं कि वह यह भी मान कर के चलें कि हरियाणा भी इस देश का एक हिस्सा है। रावी, और व्यास के पानी के बारे में वह कहते हैं कि केसेज ट्रिब्यूनल में जाएं, बाऊंडरी के बारे में ट्रिब्यूनल में जाएं और कहते हैं कि चण्डीगढ़ पंजाब को दे दिया जाए।

क्या खास बात है ऐसी? अगर आप सारे केसेज को किसी कमीशन में भेजना चाहते हैं, तो... **(व्यवधान)** आप तो कमाल कर रहे हैं, आप हरियाणा के दुश्मन हैं क्या?

**श्री रामेश्वर सिंह** : हम तो हरियाणा के साथ हैं।

**श्री सुलतान सिंह** : यह कोई तरीका है क्या? सब से बड़े दुश्मन आप हैं हरियाणा के, जो हरियाणा के नाम पर बोलने नहीं देते।

**श्री रामेश्वर सिंह** : आप हरियाणा की बात बोलिए।

**श्री सुलतान सिंह** : मैं तो हरियाणा की ही बात बोल रहा हूं। मैं यह बात कहना चाहता हूं।.... **(व्यवधान)**।

**श्री रामेश्वर सिंह** : उपसभाध्यक्षा महोदया ... **(व्यवधान)**।

**उपसभाध्यक्ष [डा० (श्रीमती) नाजमा हेपतुल्ला]** : आप बात तो सुनिए। आप उनकी बात तो सुन नहीं रहे हैं।

**श्री सुलतान सिंह** : जब अपोजीशन वाले यह कहते हैं कि यह सारे केसेज बाउंडरी के कमीशन को जाएं तो फिर चण्डीगढ़ का क्यों नहीं जाएं?

एक बात मैं और कहना चाहता हूं। माथुर साहब बड़े गर्म हो कर बोल रहे थे कि यह सरकार फिरकापरस्ती को ताकत दे रही है। लेकिन वह इस बात को भूल जाते हैं—आडवाणी साहब तो यहां बैठे हैं, जितनी बार पंजाब के अन्दर अकाली दल ताकत में आया वह जनसंघ की वजह से आया कांग्रेस की वजह से नहीं आया।

कांग्रेस ने हमेशा फिरकापरस्ती का मुकाबला किया है, चाहे वह हिन्दू फिरकापरस्ती थी चाहे वह सिख फिरकापरस्ती थी, चाहे वह और किसी किस्म की फिरकापरस्ती थी। उसी का नतीजा है कि आज सारे देश के अन्दर एक वातावरण चेंज हो रहा है। मैंने पिछली बार भी एक बात कही थी कि नागालैण्ड में इससे भी बुरी हालत थी, मिजोराम में इससे भी बुरी हालत थी, असम में इससे भी बुरी हालत थी, आनन्दमार्गी मूवमेंट इससे बहुत तेज थी, नक्सलाईट मूवमेंट इससे भी तेज थी और आज वह नजर नहीं आ रही है। मैं एक बात और कहना चाहता हूं ... **(व्यवधान)**।

**श्री रामेश्वर सिंह** : आपने मिजोरम की समस्या ... **(व्यवधान)** वहां पर आपने एक पार्टी से .... **(व्यवधान)**।

**श्री सुलतान सिंह** : आज मैं फिर एक बात दावे से कहता हूं कि अगर श्रीमती इन्दिरा गांधी ताकत में रहीं तो दुनिया की कोई ताकत इस देश के टुकड़े नहीं कर सकती। यह श्रीमती इन्दिरा गांधी ही हैं जिसने हिन्दुस्तान के भूगोल को बढ़ाया है, सिक्किम को इस के अन्दर शामिल किया है। ... **(व्यवधान)**। आप उन लोगों का समर्थन करते हैं जो खालिस्तान डिमांड करते हैं। बार-बार आप आनन्दपुर साहब रिजाल्यूशन को सपोर्ट करते हैं, बार-बार आप उन को समर्थन देते हो **(व्यवधान)**। मैं ज्यादा न कहते हुए ...

**श्री रामेश्वर सिंह :** आपने खालिस्तान पर चुनाव लड़ा है पंजाब में । सारी खालिस्तान की स्थिति आप ने पैदा की है ।

श्री सुलतान सिंह : मैं बार-बार अपने विरोधी दल वालों से दरख्वास्त करता हूं कि कृपा करके हरियाणा पर रहम करो । वह भी एक प्रदेश है, उस की भी समस्याएं हैं । राजस्थान जैसा प्रदेश सारा सूखा है उस को पानी मिल जाय तो विरोधी दलों को क्या नुकसान है । जनता पार्टी चाहती है कि राजस्थान को पानी न मिले, बी० जे० पी० चाहती है कि राजस्थान को पानी न मिले, जनता पार्टी चाहती है कि हरियाणा को फाजिल्का-अबोहर न मिले ।

एक माननीय सदस्य : गलत ।

श्री सुलतान सिंह : अगर यही तरीका रहा . . . .

श्री शिव चन्द्र झा (बिहार) : प्रधान मंत्री नहीं चाहती हैं । (व्यवधान)

श्री सुलतान सिंह : इतनी ही बात कह कर मैं आप को धन्यवाद देता हूं ।

**श्री इन्द्रदीप सिंह** (बिहार): उपाध्यक्ष महोदया, मैं बड़े ही ध्यानपूर्वक अपने दोस्त चौधरी सुलतान सिंह की बात सुन रहा था । मैं उन को आश्वासन देना चाहता हूं कि विरोधी दल के लोग हरियाणा के खिलाफ नहीं हैं और न पंजाब के खिलाफ हैं । हम इस देश के साथ हैं, देश को एकता चाहते हैं। हरियाणा भी देश का अभिन्न अंग है, पंजाब भी देश का अभिन्न अंग है, राजस्थान भी देश का अभिन्न अंग है और हम इस देश की एकता को रक्षा करना चाहते हैं । हमें इस बात पर प्रसन्नता होती है कि जब सरकारी पक्ष के लोग—देर से ही सही— खुल कर कहने लगे हैं कि हमारे देश के भीतर विघटनकारी तत्वों को बढ़ावा देने वाली विदेशी शक्तियां हैं, अमरीकी सरकार की और पाकिस्तान सरकार की शक्तियां हैं और वे हमारे देश का विघटनकारी शक्तियों को बढ़ावा दे रही हैं । आप अगर सरकारी पक्ष के लोग यह बात कहते हैं तो हमें खुशी होती है, लेकिन साथ-साथ हम आशा करते हैं कि अपने इस कथन के अनुसार वे आचरण भी करेंगे । आचरण में उन को क्या करना चाहिए, वह मुझे बताने की आवश्यकता नहीं लेकिन हम और सारा देश इस की आशा करता है कि आप महज प्रचार के लिए यह न कहें बल्कि उस के मुताबिक आचरण करें ।

जहां तक सेठी साहब का वक्तव्य है, इस वक्तव्य से मुझे निराशा हुई है ।

उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद रहमत अली) पीठासीन हुए

निराशा इस लिए हुई कि पंजाब की जो स्थिति है देश के लिए वह स्थिति कितनी चिन्ताजनक है उसका अहसास इस वक्तव्य में नहीं झलकता । उस गुत्थी को सुलझाने के लिए इस वक्तव्य में कोई रचनात्मक सुझाव नहीं है । सुझाव क्या है ? पानी का सवाल और क्षेत्रीय विवाद दोनों विवादों को ट्रिब्यूनल के हवाले कर दिया जाय । मैं सेठी साहब से पूछना चाहूंगा कि क्या इन दोनों सवालों पर कुछ सहमति पहले बनी थी या नहीं । सरकारी पक्ष के लोगों ने विरोधी पक्ष की बड़ी बड़ी आलोचनाएं की हैं । हम लोगों को कह दिया है कि आप खालिस्तान के सपोटर हैं, आप देश को तोड़ने वाले हैं, यह ऐसे ऐसे लोगों ने कहा जिन का जन्म भी उस समय नहीं हुआ था जब हम लोग कांग्रेस के स्वयंसेवक बन कर लाठी खाते थे । ऐसे एसे लोग भी

अपना भाषण देते हैं । उन का जवाब देने की आवश्यकता मैं नहीं समझता हूं । विरोधी पक्ष के लोगों ने—सेठी जी इस बात को स्वीकार करेंगे—इस समस्या को सुलझाने में कुछ योगदान किया है और अकाली दल के नेतृत्व को 45 मांगों पर से उतार कर 4 पर ले आये हैं, विवाद अब केवल 4 पर रह गया है ।

तो आज देश सदन के सभी पक्षों के उन लोगों से इस बात की अपेक्षा करता है जो भी देश की एकता और इस की आजादी के प्रेमी हैं, देश किन से यह अपेक्षा करता है कि वे चार विवादग्रस्त प्रश्नों का ठोस समाधान पेश करें । क्या समाधान आप पेश करते हैं इसी कसौटी पर मैं सेठी जी के बयान को कसने की कोशिश करता हूं; और जो हमारे माननीय सदस्यों ने भाषण किये हैं उन को भी कसने की कोशिश करता हूं । और इसीलिए मुझे निरशा होती है । अभी श्री सुरजीत ने बताया और उन्होंने चारों प्रश्न उठाये। उनमें से धार्मिक मागें सरकार ने मान ली हैं । एक विपक्षीय बैठक में इत्तफाक से मैं था जिस में धार्मिक मांगों पर कुछ बातें चल रही थीं। लेकिन जब सरकार ने उनको मान लिया तो हम लोगों ने एतराज नहीं किया । गोकि कुछ ऐसी मांगें हैं जिन को हम पसंद नहीं करते है । लेकिन उनको छोड़ दिया जाय । अभी अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून का प्रश्न है । सात गुरुद्वारे हैं जिन को अकाली नेता ऐतिहासिक गुरुद्वारे मानते हैं । जैसा कि सुरजीत जी ने बताया उन सातों गुरुद्वारों की प्रबन्ध समिति ने इस पर सहमति दे दी है और मैं समझता हूं कि इसके बाद सरकार को वह बिल पेश करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए । अभी तक सरकार ने ऐसा कोई ऐलान नहीं किया। बदकिस्मती से सेठी जी ने इस वक्तव्य में भी उस की चर्चा नहीं की । क्या मैं आशा करूं कि अन्त में, जवाब देते समय वह



कहेंगे कि अब सारी कठिनाइयां दूर हो गई हैं और इन ऐतिहासिक गुरुद्वारों के बारे में अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून बनाने में सरकार को कोई कठिनाई अब नहीं होगी ।

दूसरा प्रश्न था केन्द्र और राज्यों के सम्बन्ध के बारे में । शासक दल के एक सदस्य ने कहा कि राज्यों के लिए अधिक अधिकार की मांग करना देशद्रोह है । मैं समझता हूं कि ऐसे दोस्तों को राजनीति फिर से पढ़नी चाहिए । ऐसे बहुभाषी राष्ट्र में, इतने बड़े देश में जहां भिन्न-भिन्न भाषायें हों, रीति-रिवाज हों और भिन्न-भिन्न जातियों के लोग बसते हों वहां राज्यों को क्षेत्रीय स्वशासन का अधिकार मिलना चाहिए इसी आधार पर हमारा सारा संविधान बना है । संघीय संविधान का आधार ही है राज्यों के लिए आटानोमी । अधिक आटानोमी, अधिक क्षेत्रीय स्वशासन का अधिकार उनको मिलना चाहिए और इस को जो लोग "देशद्रोह" मानते हैं, वे, मैं समझता हूं देश की एकता के दुशमन हैं । ऐसी बातें शोभा नहीं देतीं । ऐसी बातें नहीं कही जानी चाहिए लेकिन यह विवाद का प्रश्न आज नहीं है । क्योंकि इस प्रश्न पर सरकार ने सरकारिया आयोग बना दिया है और मैं आशा करता हूं कि उस के टर्म्स आफ रेफरेंस भी उपयुक्त होंगे । उसमें दूसरे सदस्य भी लिये जायेंगे और वह इस समस्या का निदान कर सकेगा ।

बाकी रह गये दो और प्रश्न—जल का विवाद और क्षेत्र का विवाद । चौधरी सुलतान सिंह जी चले गये । विपक्ष नहीं चाहता कि जो पानी हरियाणा को मिल रहा है वह छीन कर पंजाब को दे दिया जाय । या जो राजस्थान को मिल रहा है वह पंजाब को दे दिया जाय । प्रश्न यह है कि जो पानी बह कर पाकिस्तान जा

[श्री इन्द्रदीप सिंह]

रहा है संधि की अवधि पूरी होने के बाद भी जिस को बहते हुए दस बारह साल हो गये जितना पैसा हमारे देश ने पाकिस्तान को दिया है, उस पानी को इस्तेमाल करने के लिए क्यों नहीं कुछ किया जाता थीन डैम बन जाने के बाद उस पानी का उपयोग हो सकता था वह आज तक नहीं बना। वह अगर बन जाय तो कुछ अतिरिक्त पानी के बंटवारे का सवाल होगा। 1955 की जो संधि है भारत और पाकिस्तान के बीच में वह एक अन्तर्राष्ट्रीय संधि है और अकाली दल इस बात पर सहमत हो गया है कि 1955 की संधि को वह मानता है और उस संधि के पुनरीक्षण की मांग वह नहीं करता है। पहले शायद उन्होंने की हो। तो अब जो जल का विवाद है, रावी, सतलुज और व्यास, इन तीन नदियों का जो पानी है पंजाब और हरियाणा में उसके वितरण का सवाल है। वितरण का सवाल इसलिए महत्वपूर्ण है कि थीन डैम बनने के बाद और पानी मिलेगा। राजस्थान के बारे में मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहूंगा कि राजस्थान नहर में अभी भी जो पानी जा रहा है लेकिन राजस्थान सरकार उस पानी को इस्तेमाल करने में असमर्थ है। वह पानी इकट्ठा हो कर झील बन रहा है।

वहां से लोग भाग रहे हैं, बस्तियां उजड़ रही हैं पानी के बिना तो पानी का इस्तेमाल वहां नहीं होता। तो राजस्थान का पानी कोई छीनना नहीं चाहता। बल्कि पाकिस्तान के साथ संधि के अनुसार जो अतिरिक्त जल मिलेगा थीन डैम बनने के बाद उस जल का कैसे विभाजन होगा, हरियाणा पंजाब में इसको सुपुर्द कर दिया जाए एक आयोग को। इसमें कौन सी ऐसी बात है जिसको आप कहेंगे कि देश के हित या हरियाणा अथवा राजस्थान या पंजाब के हित के खिलाफ है? अगर किसी अकाली नेता ने ऐसी कोई मांग की थी तो वह गलत थी। विरोध पक्ष के नेताओं का सहमति पर उनको राजी किया जा सका है तो इसके लिए विरोध पक्ष को धन्यवाद देने के बजाए शासक दल के लोग उनको गालियां दे रहे हैं।

अब रह गया क्षेत्रीय विवाद का सवाल। चौधरी सुलतान सिंह ने कहा कि प्रधान मंत्री ने जो अवार्ड दिया था 1970 में उसमें चंडीगढ़ पंजाब को दिया था और फाजिल्का और अबोहर हरियाणा को दिया था और बाकी के जो छोटे-छोटे झगड़े हैं उनके बारे में आयोग को बात कही थी। अभी जो विरोध पक्ष के लोग अकाली दल के नेताओं के साथ बैठे या उसके पहले जो त्रिपक्षीय वार्ता हुई तो सिद्धान्त रूप में दो या तीन बातें तय पाई थीं। एक तो चंडीगढ़ पंजाब को जाना चाहिए। चंडीगढ़ के विभाजन का कम से कम कम्यूनिस्टों ने समर्थन नहीं किया सी० पी० आई० या सी० पी० एम० ने। उसके बदले में हरियाणा को क्षेत्रीय और वित्तीय दोनों तरह की वाजिब क्षतिपूर्ति की जानी चाहिए। उसे इलाके भी मिलना चाहिए और उसको वित्तीय सहायता भी मिलनी चाहिए और हरियाणा अपनी दूसरी राजधानी बना सके इसके लिए सुविधा मिलनी चाहिए। अभी किसी सदस्य ने कहा कि हम दो सौ मील दूर चंडीगढ़ को जाना नहीं चाहते हैं। हरियाणा दूसरी जगह राजधानी बनाए तो हम इसको पसन्द करते हैं। छोटे-मोटे विवादों के लिए आयोग आप बना दीजिए। जो विरोध पक्ष के लोगों ने जो पिछली बार मीटिंग की है जिसमें अकाली दल के नेता भी मौजूद थे वहां सर्व सम्मिति से ऐसा प्रस्ताव पास किया था। मैं तो आशा करता था कि सेठी जी उसको स्वीकार करेंगे, उसके आधार पर कहेंगे कि हम त्रिपक्षीय वार्ता

करने के लिए तैयार हैं । .. **(समय की घंटी)** . .

मैं अन्त में यही सेठी जी से निवेदन करूंगा कि इस विवाद में दलीय दृष्टि से देखने का प्रयत्न न करें । देश का हित सर्वोपरि रख कर आप विपक्षीय बैठक बुलाइये विरोध पक्ष के पास आप जाइए अकाली दल के नेताओं को बैठाइये और इसमें समझौता करने की कोशिश कीजिए । इस बात पर सहमति हो जाएगी तो जैसा कामरेड सुरजीत सिंह ने कहा, मैं इस बात से सहमत हूं कि अन्य प्रश्नों का कोई न कोई हल निकल आयेगा ।

**उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद रहमत अली) :** आपका वक्त ज्यादा हो चुका है समाप्त करिये ।

**श्री इन्द्रदीप सिंह :** तो मेरा कहना है कि वहां जो ऐक्सट्रीमिस्ट्स हैं उनको जनता से पृथक् किया जा सकता है, उनका मुकाबला किया जा सकता है । आप के दल में इस अनुशासन की आवश्यकता है कि आप के दल के जो बड़े बड़े नेता हैं भिंडरावालां साहब के पैर छू कर प्रणाम करते हैं, या आपकी सरकार के लोग उनके अनुयाइयों को सेल्फ-लोडिंग गन के साथ दिल्ली में परेड करने का मौका देते हैं, ऐसी रियायतें उनको न दिया करें तो अकाली दल के नेताओं के साथ समझौता करने के बाद कोई ऐक्सट्रीमिस्ट ऐसा नहीं कर सकता उनका मुकाबला किया जा सकता है और मैं समझता हूं कि पंजाब और हरियाणा दोनों की सुरक्षा इसी में है, दोनों के हितों की रक्षा इसी में है, जिसके लिए हम सब को मिल कर काम करना चाहिए ।

SHRIMATI AMARJIT KAUR (Punjab) : Pefore I start my sp<;ech, T welcome you as **Vice-Chairman of this** august House and wish you all the best.

**श्री रामेश्वर सिंह :** मैडम आप तो हिन्दी अच्छी तरह बोलती हैं । . . (व्यवधान) . . .

**श्रीमती अमरजीत कौर :** मैं पंजाबी अच्छी तरह बोलती हूं ।

**श्री रामेश्वर सिंह :** आप हिन्दी अच्छी बोलती हैं ।

**श्रीमती अमरजीत कौर :** पंजाबी आती है हिन्दी नहीं आती है ।

**SHRI** V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): At least, now I am happy to hear you speaking in English. So far, I was in trouble.

SHRIMATI AMARJIT KAUR: Mr. Vice-Chairman, Sir, the Punjab solution has an all India importance. Therefore, it has to be debated keeping the national interest in view. It requires a dispassionatt discussion and all concerned >hould help-in **the** solution of the problem. But J am sorry to say that the Opposition is trying to complicate the matters by shifting their stand. Punjabis have always stood for the integrity of the country and fought for its freedom unitedly. No forces can divide any part of our country, much less Punjab; Those who have been trying to support the extremists or the disruptive forces are only a handful of people and do not represent the Punjabi culture. Violence has np place in our culture and civilization. T would like to point out, Sir, that whenever the Akalis have started the agitation, Punjab, has always been the loser_ Punjab has never gained. I would like to remind my colleagues, if you remember, during the Punjabi Suba agitation, what did Punjab get? Punjab was divided. Whenever these Akalis started the agitation, we iiever gained. Tliat time Haryana came into being from Punjab and Himachal was made witb the result we vvere left with a small Punjab. Now, again, I would like to say that the Akalis are trying to create differences. During this ablation we haVe gained **nothing. Tliey have tried to create difitoreuoai**

(Shrimati Amarjit Kaur]

between the Sikhs and the Hindus, in which, I am sorry to say, they will not succeed. And it is not possible to separate the Sikh from the Hindus because they are all closely related. And as you know, the Sikhs earlier on have been the creation from the Hindus^

Sir, this time, the Akali agitation has brought down the downfall of Punjab. Progress of Punjab is at a standstill. Businessmen, maybe Hindtis or maybe Sikhs, are not feeling secure in their business, with the result they are shifting their business from Punjab. Akali agitation has, in fact, given the Sikh community a bad name because of raising the issue of Khali-Stan. Only a handful of Sikhs are for Khalistan. You cannot confine the Sikh or any Punjabi to any place. They go anywhere in India or outside. Wherever they go, they can get progress. You cannot confine them to just one State.

Sir. the water and territorial issue is nothing new. It has been there for many years. If the Akalis were genuinely interested in the welfare of Punjab, why did they not solve it during the Akali-Janata rule in Punjab from 1977 to 1980? For nearly three years, the Akalis had their Ministers. Sardar Siirjit Singh Bamala was the Cabinet Minister for Agriculture and Irrigation at the Centre. Why did they not solve the Ravi-Beas water issue? Why have they suddenly raised the issue now? Was it not important during their three-year rule? This shovre that it is a political i.ssue. They are not serious in solving that problem. Why are they not responding to • the invitation of the Government? Sir, Sardar Harkishan Singh Surjeet has accused the Congress (I) leaders for creating the Hindu Raksha Samities. I would like to inform him that it is the creation of the Jana Sangha and the R.S.S. We are grateful to the hon. Prime Minister who has already conceded the religious demands of the Sikh communitt.'. The matters regarding territorial adjustments and water disputes have been offered to be referred to a tribunal. Therefore, there is not much left for which we should disturb the Punjab peace and weaken the country as a whole. Thank you.

SEIRE KHUSHWANT SINGH (Nominated): Sir, it would appear very much that We are like the needle of a grammaphone caught in their grooves. It used to be Assam. Now it is the Punjab In the speeches of the Government, the opposition, and, in fact, all of us, we "have been saying the same thing over and over again for a year and a half. I hope that now somebody either from the Government side or the opposition side who would move this needle forward to something different and something more positive. Quite obviously the prime responsibility for this falls on the Government. I rely on the statements of the Prime Minister, the Home Minister, the Chief Minister of Punjab and Mr. Rajiv Gandhi to make the following comments, largely to put the record straight. The-Prime Minister has gone on record to say that at different times the Akalis hare been adding to their demands. To the best of my knowledge they made a concise list of 45 demands and to this day they have not added a single more demand to these 45. It has also been stated that the religious demands of the Akalis have been conceded. Yes, two or three very peripheral demands have been conceded. But the basic demand of an all-India Gur-dwara Act has been hanging fire. All the-time We have been told that consultations are going on with the States. As my friend: Mr. Surjeet has mentioned, the main Gur-udwaras involved have agreed to this Act. T do not understand why then this is taking so much time. I know that our telephone system is very faulty. But surely it does not take a year and a half to get the reactions of the States and go rhead with something which exclusively concerns the Sikh community.

Much has been said about the misuse of Gurudwaras for habourine criminals. Mr. Home Minister, if you have any concrete-evidence of criminals being harboured inside the Golden Temple, you should place-it on the Table of the House. At one time a list of 40 men was given to the Akali Dal. It was found thgl at least four of these 40 men were not even li-ving in this country. They were li-ving abroad.

If you have been to the Golden Temple, as I know you have been, it has several entrances. At each of these there are larga-

numibers of armed police men and security officers who know by photographs and by contact who these criminals are. How is It that in all this time you have not been able to put your hand even on one of them? What kind of a Government or police you are running when a senior police officer is killed outside the gates of the Golden Temple and his assassin gets away in broad daylight? Is this the kind of evidence that you are going to give us and say that the Golden Temple is being misused.

Then, you have said frequently that the Akali leadership has been very soft towards extremists and Khalistani elements. I concede that at one time they were. But in recent months they have made strong ■criticism and strong condemnation of all these acts of violence. The latest reports talk of foreign interference. We all know that when a doctor does not know what is wrong with his patient, invariably he says that this is some kind of viral fever. The same thing is happening here. If we cannot get at the root of something then we say it is the CIA. Comrade Surjeet also said it. Have we got any evidence of C.I.A. interference? And even more recently it was said that Pakistan is creating Nihangs, or at least making Muslims into Nihangs and sending them into Punjab. Mr. Home Minister, have you caught any one of these people, the so-called Pakistani Nihangs?

**श्री रामानन्द यादव** (बिहार) : मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूं . . . (**व्यवधान**)

**उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद रहमत अली)** : यादव जी, अगर आपको कुछ कहना है तो आप डाइरेक्ट मेम्बर से कुछ नहीं कह सकते हैं। पहले आपको चेयर से इजाजत लेनी चाहिए। आप इत्तफाक करेंगे कि इस तरह से तफसील में इंटरवीन करना मुनासिब बात नहीं है।

**श्री रामानन्द यादव** : उपसभाध्यक्ष जी, यह परिपाटी रही है कि जब कोई भी मेम्बर भाषण देता है तो अगर कोई मेम्बर उनसे जानकारी हासिल करना चाहता है तो वह उनसे पूछ सकता है। अगर वह कह दें कि नहीं, तो ठीक है। लेकिन यह परिपाटी रही है।

SHRI KHUSHWANT SINGH: And if you have, do you know how to tell a Muslim Nihang from a non-Muslim Nihang? In the presence of ladies, I need not tell you; but I can explain how you can find out a Muslim Nihang and *the.* other Nihang. The point simply is, when you make these insinuations about foreign agents infiltrating into Akalis and Akalis being influenced by them, you are insinuating treason; you are accusing Akalis of being treasonous to their country. As you well know, the record of the Akali party in patriotism and sacrifice is perhaps much bigger than that of your party or the opposition parties put together.

DR. RAFIQ ZAKARIA (Maharashtra): Question mark.

SHRI KHUSHWANT SINGH: You can put a big question mark. I will be answering. When you make this kind of treasonous insinuation and then, Mr. Sethi, you more than anyone else, have got into this gramophone groove saying 'Government doors are always open', what person with any self-respect who has this stigma of treason put on him, is going to enter these doors that you always talk of being kept open?

Having said all this, let me say clearly again that I have absolutely no brief for the Akalis. 1 feel that when thev say that they condemn Khalistan and that do rot support the demand. It is enough. Words be followed by actions. They must stop talking the language of separatism.-It is my conviction that they must either abrogate or amend the Anandpur Sahib Resolution in which seeds of separatism' are clearly present. They say and to that extent they are correct—that we are a separate religion. But are not a separate nation. We are not Hindus; Wg are Sikhs but we are Hindus. I think it is time that the Akalis came out more categorically in condemning the separatist tendencies.

[Shri Khushwant Singh]

They also must condemn violence in more positive terms. They must also let Niran-karis off the hook because this confrontation has gone on far too long. Nirankaris have offered to expunge offensive reference^ to Sikhism from their books. This offer should have been accepted long ago and something done to come to a settlement with these people. It is unfortunate that at this verj' critical juncture, the Sikh community should be led by people who do not even know the interests of their own community.

(समय की घंटी)

श्री रामेश्वर सिंह : उनको और समय दे दीजिए ।

उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद रहमत अली) : रामेश्वर सिंह जी, आपकी सिफारिश की जरूरत नहीं है, मैं माफी चाहता हूं । मैं अपनी जिम्मेदारी का महसूस करता हूं । मैं जिस तरह से हाउस को चलाना चाहता हूं उसमें मैं आपकी सिफारिश का मोहताज नहीं हूं ।

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE (Mahara.shtra): We have got time for our group.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYED RAHMAT ALl): I know,

SHKl KHUSHWANT SINGH: It must be elementary commonsense that sincr the Akalis are after power, they have not the slightest hope of coming to power without the co-operation of the Hindus in Punjab. And here they are doing the worst to create a rift between the Hindus and the Sikhs and deprive themselves of the possibility of coming to power. It is indeed unfortunate that at thi'; critical juncture in the history of the Sikhs, it has thrown up a semi-literate about from an obscure hospice as one of ♦he most important leader of the commu-

. nJtv.

Mr. Vice-Chairman, I will just sum up what I have said. Please do not ring the bell. It puts me off. Basically, there are only three issues we have to settle. One is the readjustment of boundaries, the second is the river waters dispute and and the third is the All India Gurudwara Act. You have offered a commission on the boundary question. But t do not think this is an honest offer. It has been settled once and for all that Chandigarh must go to Punjab. I do not think there is any dispute on this question. It is equally clear that you cannot divide Abo-har and Fazilka from Punjab for geographical and historical reasons; this is one country where you cannot have a hundred mile long corridor. I think, this settlement should be announced as soon as possible. There is also the question of giving money to Haryana. Nobody disputes that. If Punjab gets Chandigarh, Haryana -must get money to build a . capital of its own.

There is also the river water question. What is the dispute now? I do not understand what we are babbling about? You want to refer this to river water tribunal. The Akalis have laid their cards on the table. They say, 'Give it to the Supreme Court; we will accept whatever verdict it gives.

Then, there is the All India Gurudwara Act, Mr. Surjit has put it very clearl)' that nothing really remains to be settled. For some reasons unknown to me and to any one else, Govermnent sesms to be dragging its feet. It is extremely painful that here on this one great problem which should unite the Opposition and the Government, we are taking purely partisan attitudes. Mr. Home Minister, you know from your secret reports about Hindu militarism. What I fear most today is the Hindu backlash, the backlash of the Hindu extremists. It is evident that the Sikh extremists cannot 'nave it all their own way. If they kill innoeent Hindus in the Punab,' it is only a matter of time than the Hindu extremits will hit back and then the fat will be in the fire. I knov,' for certain in Delhi, in recent

weeks, there are young Hindus going round with trishuls and which have slogans written on them.

"शिव शक्ति का पाठ करेंगे,
अपनी रक्षा आप करेंगे ।"

collecting money to buy arms and saying quite clearly that if this kind of killing goes on in the Punjab, we will settle scores in Delhi and elsewhere. Once that happens, whether you like it or not, you will have laid the foundations of khalis-tan. Please for God's sake, make sure that a settlement is reached in this Session of Parliament and not any longer. Thank you.

SHRI MADAN BHATIA (Nominated): Mr. Vice-chairman, Sir, I have before me the statement of the hon. Home Minister and it does make mention of the problems regarding the share of waters and the territorial dispute. Mr. Home Minister, it would be a mistake to ignore the rationale of this agitation. It will be equally a mistake to ignore the political affinity between this agitation and the conduct and the attitude of the Opposition in the last three years. It is equally important to bear in mind the dangerous and the disastrous implications of this agitation and the attitude and conduct of the Opposition, for the sur- | vival of Parliamentary democracy in this ' country. I respectfully submit that this agitation is not for particular demands. In the last session Mr. Khushwant Singh himself had said from the floor of this hon. House that there shall be no peace in Punjab unless you share political power wit'ri the Akalis; That is the essence and spirit of this agitation. This agitation was resumed when thg Akalis lost their power *\fy* Punjab. The whole rationale of this movement was, you have defeated us at the polls, we shall make it impossible for you to govern unless you share political policy of a rift. I respectfully submit and tude that the whole movement took its birth. Hon. Member Shri Surjeet has described that the Government's policy is the policy of a rift. I respectfully submit and { I wish to congratulate the hon. Home | Minister for having adopted a policy of exemplary patience. It is only because of this exemplary patiertce displayed by **the** Government that the real fangs of this agitation have been exposed to the countrymen in this country. What has been said by some of the leaders of the Akali movement? They have resurrected the three-nation theory from the records of 1946 and 1947. They have given a call that we shall achieve the aim which We missed in 1947. And they want to achieve this 'aim by the call of direct action. Thosg who have had the experience of what happened in 1946 and 1947 on the call of direct action by the Muslim League, they will know the implications of what this call of direct action means. It is this sinister aspect of this movement and this agitation to which the people in this country cannot close their eyes. And it is because of this spirit of this agita-tion that it is not possible for Mr. Home Minister to come to a settlement with the Akalis. But as I have said, this movement, this agitation cannot be considered in isolation from the conduct and attitude of the various opposition parties in this country and that will explain the attitude which has been taken by the various opposition parties towards this movement. Immediately after the 1980 January elections, Mr. Charan Singh, the leader of the Lok Dal, openly declared— a statement was reported in the press— that the verdict of the people is meaningless and irrelevant. It is this attitude whichi ihas landed this country into this di'sastrous malaise. It is this attitude which is responsible for various agitations which have gripped this country ever since 1980. And this attitude meant that we have been defeated at the polls, but we shall carry on the fight with the instrument of agitation's, creating chaos in the country, making it impossible for the Government to function, by taking the agitations and all these activities *to* the streets. *This* is not all. Mr. Vice-Chairman, Sir, when the Assam agitation was in its infancy, Mr. George Fernandes, in order to whip up the mob passions of the people of Assam, declared; Assamese are a nation. There is not ever one leader in the opposition who stood up to condemn the statement of Georg< Fernandes. T respectfully submit, can yot

IShri Madan Bhatia]

imagine any countryman \a this country, Tvho has the love of India in his heart, ■who would go to the extent of making this particular statement by describing the Assamese as a nation? I cannot think so. Then, it is said that the Opposition wants peace in Punjab. The remarkable statement, marked by its double talk has been made by Mr. Advani only last week. I would read that statement. This was reported in the *Times of India* of July 18. In the first part of the statement, Mr, Advani says: "This agitation in A<isam is being prolonged by the Congress(I) in order to reap some electoral advantage". But in the last part of the statement, he «xpressed the view that "the Punjab situation could be resolved if only the Akalis took a proper stand". I, for myself, ami unable to reconcile the two statements. Any per'son who is looking for principled politics will not be able to reconcile the two statements. This is the extent to which the political bankruptcy and political hypocrisy of the Opposition has gone. Not only this, Mr. Advani stated in the course of this statement that the Government has not been able to apprehend the miscreants, some of whom have taken shelter in Gurdwaras. But when the pressmen asked him repeatedly a pointed question, "will you support the Government has not been able to apprehend the Gurdwaras to apprehend those miscreants?", he parried the question. This is the report of th; 'statement by Mr. Advani.

Then, we have the leader of the Janata Party, Mr. Chandra Sekhar. Flushed with the lustre of his *padyatra,* be comes to Delhi and he makes a remarkable statement. After having told his countrymen that he has discovered shortage of water and poverty in the villages, what programme does he place before the people to solve the problems of water shortage and poverty? He says: "I am going to e^ablish units throughout the country in order to coordinate the agitations". This is the attitude, Mr. Vice-Chairmarr, which shows that the Opposition in this country is not in a mood to let : the parliamentary democracy function in accordance with established nomw and conventions. The basic norm , and convention of parliamentary democracy is this; a Government which is elected at the polls is allowed to govern for the period prescribed by the Constitution. The Opposition has the ilght to criitcise the Government, but the Opposition has DO right to disallow the Government from functioning by creating chaos in the streets. *(Time Bell rings)* Sir, I shall take only one minute more. It is not only me but the famous jurist Jennings, who has described the role of the Opposition in these terms and I shall just read a few words:

"In fact Opposition and Government are carried on alike by agreement. The majority agrees that the minority should criticise. The Oposition is compelled by the logic of parliamentary system to adopt a reasonable attitude. It is not only Her Majesty's Opposition but also Her Majesty's alternative government. It presents to the electorate in that capa-ciy. It asks for a mandate to govern. It must therefore show its capacity to sovern in the Parliamentary system".

**श्री रामेश्वर सिंह** : यह आप अपोजोशन के बारे में कह रहे हैं, तो यह कहिए कि इनके हवाई-जहाज का अपहरण किया . . . **व्यवधान** . . यह अपोजोशन की बात आप क्या कह रहे है? आपके हवाई-जहाज का अपहरण किया . . . **व्यवधान**

**उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद रहमत अली)**: मैं रामेश्वर सिंह साहब से कहना चाह रहा हूं कि आप बराहेकरम जब जो में आए रास्ते में खड़े होकर गुफ्तगु करने का, बात करने का, तकरीर करने का तरीका, अदब को मलफूज रखते हुए छोड़ दें, तो ज्यादा मुनासिब है।

**श्री रामेश्वर सिंह** : वह मुझको मालूम है।

**उपसभाध्यक्ष श्री सैयद रहमत अली** : मुझे अफसोस है कि आप उसके बावजूद उसके खिलाफ अर्जियां करते हैं जो हाउस के लिए कोई अच्छी अलामत नहीं है।

**श्री रामेश्वर सिंह :** मैं जो करता हूं, इसऊल जलूल का जवाब मैं देता हूं।

**उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद रहमत अली):** रामेश्वर सिंह जी, आप तशरीफ रखिये **(व्यवधान)**

**श्री रामेश्वर सिंह :** हवाई-जहाज का अपहरण कराइये और उसको मिनिस्टर बना दीजिए, एम० एल० ए० बना दीजिए। यह अपोजीशन ने **(व्यवधान)** अभी आपने पांडिचरी में क्या किया ?

.6 *VM.*

SHRI MADAN BHATIA: Mr. Vice--Chairman, Sir, we are today on the crossroads of history. The very future of parliamentary democracy is at stake in this country. This is the situation, in fact, and no democracy can function if the defeated minority does not allow the majority to function. I respectfully submit, Sir, that this was the situation which faced the ] United States of America in the 19th ] century when the people in the South who lost the election and against whose verdict Abraham Lincon was elected, decided that they would refuse to accept the verdict of the people. They even threatened to secede from the United States of America. They threatened to take to arms and wage a civil war. And what ■was the answer which was given by Abra-liam Lincoln? He said—^I quote:—

> "If the majority does not control, the minority must mould thai be right? Assuredly not. Though the majority may be wrong in electing me, yet we must adhere to the principle that the majority shall rule. By your Constitution you have another chance in four years."

This is my respectful submission to the Opposition: They will have a chance at polls after five years. And Mr. Home Minister, my respectful submission is this that Abraham Lincoln stood up to fight against this challenge to democracy, and through blood, sweat and tears of the people of the United States, a united country was born and this challenge to the democracy was destroyed once for all, and I hope that the Govemmeat of India under the leadership of Mrs. Gandhi— and I have no doubts that it will be so— will face this challenge to destroy this attitude of the Opposition once for all so that integrity and unity of the country is never challenged by the Opposition with this attitude that if it is defeated at the polls they shnll make it impossible for the Government to function by creating chaos in the streets.

*(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYBD RAHMAT ALI): Honourable Home Minister.

SHRI SUSHIL CHAND MOHUNTA (Haryana): Sir, my name is there. I will take only two or three niinuteis.

SHRI V. N. TIWARI (Nominated): Sir, I come from that State and 1 definitely want to say a couple of words.... *(Interruptions)*.... Sir, I am not from any party.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRT SYED RAHMAT ALI): I know.

SHRI V. GOPALSAMY: Mr. Vice-Chairman, I would like to express the views of my party.... *(Interruptions)* The Home Minister is waiting.

SHRI V. N. TIWARI: Mr. Vice-Chairman, I come from that State and I seek your permission for just three or foui minutes—not more than that. Since 1 come from that State, I am facing all that.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYBC RAHMAT ALI): Then there will bg nc end to it.

SHRI V. GOPALSAMY: I come froi the deep South.

THE VICE-CHAIRMAN (SHR SYED RAHMAT ALI): Please resum your seat. Mr, Gopalsamy. All right. Mi Tiwari.

SHRI V. N. TIWARI; Mr. Vice Chairman, the other day I said in this House that every Sikh is not an Akali, every Akali not an extremist and every extremist and fundamentalist may not be an agent of international agency, but what action Government proposes on persons who say—"We have to think whether Sikhs are to remain in this country or not"— this is by Sant Longowal—or, "We are neither in favour nor against Khalistan. If the Government wants to give them a Khalistan, we will gladly accept this offer". This is by Sant Bhindrawale. The issue before me is not one of law and order, but a deeper and a serious one. The issue is that of democracy versus theocracy, secularism versus fundamentalism. Therefore, the Opposition and the Government have to make up their mind to see that whether we fight different forces of fundamentalism which may be in operation from thg bordering State and other places which in the last couple of years have threatned national unity. Are we Indians prepared to accept them or to reject them for all times to come? TTiis is a question not only of Akali demands or territorial demands or of river waters or of the Chandigarh issue. The basic issue is: are We to accept these fundamentalist extremists or not? Have we not to wage a war against those who do not believe in democracy? As has been already pointed out by my friends, those who do not want to allow people to function in this country and start agitations when they are not in power, how are they going to be tolerated and how are they to be treated?

And then I have only one word to sny which I hav.e been asking myself. 1 have read this statement very clearly, not once but thrice. Mr. Vice-Chairman, Sir, the Government invites Akalis for talks, a date is fixedj 15th June, as the tentative date, and on 11th, June the reply comes; Give, us the tentative proposals. That means, "either accept our demand or we will not come." Now, ■what to do in such a situation? What have we to do? Look at it? When 1 said T come from Junjab, I mean Rs. 35 < crores have been spent just on this agitation, which could have been spent for the development of the State. More power could have come, more industries could have come to the State. The time has come when the culprits have to be dealt with. As I said, every Sikh is not an Akali and eyery Akali is not an extremist. We have to watch those who are talking against the unity of this country. It is said that Mr. Balbir Singh Sandhu is not in the Goldcn Temple, then who can he issue Press statements from the Golden Temple? What should I think and feel about these things? Mr. Vice-Chairman, it is no more a question of this country's debate. It is no more a question of what this leader states or that leader states. It has become an international news, and everybody is getting to know about it. Who is this Buta Beg, who for the last ten years has been creating problems for our people? Money is very big lust; and that money has been used in this country for creating chaos. And these agencies are giving reports at what time they went to Pakistan, at what time they came to India, and what their links are_ This is not a statement by leaders, because when a problem comes, up, investigations are made. Therefore, Mr. Vice-chairman, let us listen to the international reports by scholars which say that our border State is already on fire.

When I said that I come *{mtot* that State, you, Mr. Vice-Chairman, could not understand what I am saying. For me it is not a question of blaming this or that. I have been married to a Sikh girl for 25 years, and I cannot tell my son or daughter whether the Hindus are in the wrong or the Sikhs are in the wrong. This is the kind of thing the-Punjabis are passing through.

Therefore, listen to the history and fight against the forces of democracy. And, Mr. Vice-Chairman, I am not saying it in the form of a tribute. Even my Sikh friends, even the Akalis, know that ii' they cannot get something from Mrs. Gandhi, they cannot get it from any other

Indian leader. Therefore, let us, in the interest of the State, in the interest oi the country, stajid like a rock. Extremism, separatism haye to be finished from this , country once for all. If they want to settle this issue in a democratic manner, ihey are most welcome and they may be accommodated to the maximum, but not at the cost of unity and integrity, of this country.

*

Thank you.

[The Vice-Chainnaii (Shrjniati IVTaiuarct Alva) in the Chair]

SHRI SUSHIL CHAND MOHUNTA (Haryana): Thank you very much. Madam Vice-Chairman. I come from Haryana. That is why I was more interested, and I was listening very carefully to what Mr. Sultan Singh was saying. And I thought that in the view point of the Opposition, that of the people who belong to the State of Haryana must also come forward.

About the position regarding the dispute which is involved, we have simply fallen into the habit of simply mentioning it as a Punjab issue. I caimot understand how we can just term it as a Punjab issue, discuss the matter with certain people belonging to one particular State and completely ignore, exclude, those people who come from the neighbouring State, Haryana, because the way the issue is decided in Punjab is bound to affect the people in the Haryana State. The river-water dispute is bound to affect Haryana. The territorial dispute is bound to affect Haryana. So, there can be no solution of the problem without having Haryana along with Punjab to decide the issue. You cannot decide the matter in isolation only while talking to one particular group which comes from Punjab and leave Haryana absolutely.

1 do not say that the confrontation should be continued. There should be end to it. We have reached a stage where the stands which each political party has taken, must be relaxed so that there is sufficient room found for finding a scflu-lion. We have found at the tripartite meetings that the water dispute could be settled to rhe satisfaction of both the States. It Wiis decided, agreed, between the Akalis and those Members of Parliament, sitting there, representing the Opposition parties, that the water dispute could be referred to the tribunal. Haryama is not against it. If. referring it to the tribunal satisfies any--body, v\e for one want a judicial decision.

It has been our feeling throughoiJt that Haryana, while being allocated its share of water, has been harmed, its interests have been ignored. We are entitled tO' more water and less was given to us under the 1981 agreement. Our own condition was that the link channel which would; provide Ravi-Beas water, should be constructed. It was agreed by the Akalis' representatives that the link channel would be constructed. The only small dispute that remained was about the amount of water that should flow in that channel. This matter also could have been referred to the tribunal. That would have been the end of the water dispute, and no dispute would have remained about it after that.

Rjegarding the territories, T want to say, I want to go on record, we do not want any areas which belong to Punjab. But for heaven's sake these areas which iiie Bagri-speaking areas, Hindi-speaking areas, do not give them to Punjab. In 1966, Haryana wai formed. Now it is, 1983. After all these years who is the sufferer? Not a drop of water has come to Haryana because of the fault of not having a channel there.

Then about the whole territory, Fazilka and Abohar, in 1970 it was decided Ihai in lieu of Chandigarh, Abohar and Fazil ka should be given to Haryana. Not an inch has come to Haryana. All these years Haryana has been the worst sufferer. And if this stalemate continues, who is the beneficiary? The first beneficiary would be, r would say, Punjab because not a drop of water comes to us. All the water is utilised by Punjab. *;

Regarding the territory, Punjab retain; the control over that area which has been

[Shri Sushil Chand Mohunta] earmarked, which has been allotted to Haryana or which has been found to belong to Haryana, being a Hindi-speaking area. We have wasted so much time. In ■ these deliberations one-and-a-half years or two years have been wasted. It was so simple and easy. There werj 100-odd villages. TTjese villages could have been toured by those members attending the tripartite meetings. They could have been asked to accompany the hon. Home Minister and go into that area which some pecrple say is disputed. Then they could have seen with their own eyes the dress the people wear there, the language they speak, the houses that have been built, the culture that exists among the people. It can be done so'easily. Then there would have been no dispute whatsoever. Punjabi areas we do not want. Punjabi areas should be retained by them. But what is Hindi area, what is Bagri area, should rightfully given to Haryana. Don't appoint another commission. A commission was appointed and Chandigarh was rightfully given to us. Then because of certain agitations that took place, the Centre ■succumbed to the pressures of the Akali Party and Chandigarh was handed over to Punjab. We agreed in the larger national interest that Chandigarh might be given to Punjab. But for heaven's sake, give us *ihat* area which belongs to us and put a "Stop to this whole matter. If there is a dispute, try to settle it, not by statements from here or by statemetJts from there, but try to settle it on the spot. Let us go and find out ourselvss as to what this area wants. 1 have got information that a large contingent of people from Fazilka have started a march towards Delhi to show to you that this is the dress that they ■wear, that this is the language that they speak and they belong to Haryana, and they have nothing in common with Punjab. And all these years, that area has suffered. Water has not been given to ihem and no development activity has taken place in that area. I will tell you that after another four or five years, Fazilka and Abohar will be so backward that if at all they are given to Haryana, it will take Haryana another 20 years to bring them on par with the rest of Haryana. So I do ^ mot understand why we cannot come fcr-ward and face the situation squarely and do what is right. Even in 1970 Faiilka was rightly given to us. What has happened in 1983? There was no resentment in 1970, as is evident from certain statements here. As a matter of fact, in **1970** after the decision was given to give Chandigarh to Punjab and Fazilka and Abo-har to Haryana, there was Diwali in the whole of Punjab. And what happened in Haryana? There were agitations, there was firing and 12 people died at variou*; places —four ?;t one place, five at another place, one at another place and so on. In all 12 peo'le died in those agitations. Mr. Sultap Singh said that the interests of Haryana chould be looked into. You have the same Government, Congress (I) Gov-ernment at the Centre, in Punjab and in Haryana. But all these three Governments are speaking in three different voices. Why can't this party which rules the country today speak with one voice and say that what belongs to Haryana should be given to Haryana? They should make their stand clear. The Chief Minister of Punjab says, "Fazilka and Abohar belong to us." The Haryana Chief Minister says, "Fazilka and Abohar are our birthright." Now if the Government formed by the same party at the Centre and in the two States speak in three different languages, can We say that you are sincere in solving the problem? If you really want to solve the problem, you first make your stand clear. What do you think of thg problem? Fazilka and Abohar belong to whom-Chandigarh should go where? And what happens to the waters? Make your stand clear. Then we will tell you what our stand is. There may be certain differences, but those differences could be looked into. But you don't want to make your stand clear and you leave everybody in the lurch And who pains politically? Those people in Fazilka and Abohar consistently, under compulsion, have to vote always for the Congress Party because they want to sa»e their skin, because of communal bias. Don't let these people of Punjab develop a communal bias. And don't keep those people under subjugation. Let them also enjoy free air. Let them also have, the freedom to make their own choice. Let them also be free. Why keep them imder pressure? So, to solve this problem regard-

ing the territory — a solution more or 'ess I having been evolved for the water dispute— I would request the hon. Home Minister to consider my suggestion. He should be bold enough to come forward and say that Chandigarh should go to Punjab and Fazil-ka and Abohar should be given over to Haryana. As regards the remaining bcr- . der areas between both the States either a commission be appointed or gram pan-chayats of those areas be asked to pass resolutions about their wish; their fate can be decided in consonance with the wishes of those people which can be known through the resolutions of their gram pan-chayats. This is the only solution; there is no' other way out. You have to come to a decision and you have to find a solution in this way. You do it with a bold and bold heart and I will tell you the whole country will appreciate it.

PROF. SOURENDRA BHATTACHAR-JEE (West Bengal): Madam Vice-Chairman, I was wondering listening to the speeches of honourable Members from the Government side why they were tilting at the wind-mill. It was no use dilating on this or that character of Akali Dal. because the dispute has to be settled with them primarily. It has been acknowledged by the Union Government that it will have to deal with Akali Dal though there may he consultation with other States. The dispute is raging with them so much that I dilatfng on this aspect can further vitiate the atmosphere. So that aspect should be kept apart. The statement of the JJome Minister bears an eloquent testimony of that. But the fact remains that this issue, in spite of the discussions for a long time, has been continuing and has been going from bad to worse. And for this situation the ruling party at the Centre which is responsible, must take the responsibility and he^r the burden for securing a settlement. It is unfortunate that while the Opposition as a whole has tried to be helpful. the Prime Minister has been trying, v/hile appealing to the Opposition for cooperation, to divide the country on questions on which there is much agreement on both sides. If she continues persistently to. blame the Opposition for things for which they are not responsible, it is bound to happen that the Opposition viill have to retaliate. She should act and speak as a cementing factor, not as a factor whiclj. creates further dissension. We have found the extent of division thjjt can be created under her leadership. For example, la Kashmir, a sensitive border State, we know the kind of situation that is continuing. Similarly, a very dangerous .situation has been penisting Punjab. Therefore, our submission is that the Government, which presides over the destiny of the country, owes it to the country as a whole to put an end to the stalemate resulting in serious dissension within the country, in Punjab and elsewhere in the north-eastern frontier, and so *on.* Assam situation has been utilised for saddling the Congress Government in power. Now, if everywhere ii is a question of power with the ruling party at the Centre, that reveals the character which is not in conconance with the national interests. National interest is not just the interest of the Congress (I) Party. This should be borne in mind by the leaders of that particular party. Tn conclusion, I have just one submission which has come in the press again and again.

The deliverer of the goods is the Prime Minister, net the Home Minister nor the Political Affairs Sub-Committee. Then, how is it that the Prime Minister does not take it in her own hands the reins of negotiations and clinch the issue? That creates the suspicion that perhaps a solution to this problem is no; sincrely desired. Let her dispel that suspicion and let the-country be convinced tha' the supreme effort will be made to seek a solution of this very serious problem which may lamd the country in a far greater trouble in a very short time.

SHRI GHUL.AM RASOOI. MATTO (Jammu and Kashmir): Thank you very much for giving me an opportunity , to speak on this subject. T have been lis-tening to the speeches from both sides. Members from this side were trading charges against the Congress (I) side and were asking them: "From 1971 to 1977 you were-, in power and you did not implement the-decision of the Commission". Similarly, from their side they were trading charges against the Opposition and were asking them: When Janata Party was in power, why did you ,nOt implement it? Ths.

[Shri Ghulam Rasool Matio]

Government is silting on this issue for the j last one and half years. The problem is very much there. It will not be solved by trading charges from one side to the other side.

We in Kashmir have vested interest in peace in Punjiib. For us the only line of communication to the rest of the co^ untry is through. Punjab. We want solution of this problem immediately. It cannot be allowed to remain in drift.

Our Chief Minister while attending the conclave of opposition Chief Ministers on the 30th June has taken a decision to the effect that the solution of this problemi should be on the basis of reference of the territorial disputes issue to the Tribunal, handing over Chandigarh to Punjab and referring the water dispute also to the Tribunal. These issues must be settled on these lines. If the drift continues, we will be the worst sufferers. If there is any trouble in Punjab, we will be faced with the problem of exodus from Punjab because Kashmir is the only place which is a peoce-loving place where both the Hindus and the Sikhs will come in large nimibers aki4 'ha' will create problems for our State. I will request the Government to take a positive decision in the matter and implement' it. If there is opposition to such a decision, then we will side with( the Government and see that the Akalis and the extremists are isolated on this issue. T mention this because a report was emanating iProm Amritsar that Akalis were not happy at the attitude of our Chief Minister in solving the issues, because he had said that territorial disputes should be referred to the Tribunal. I may tell those .\kali friends that it Is only through negotiations that this nroblem can be solved nnd not through confrontation.

I would also make a request to the Home Minister This is his sixth statement on this issue and this statement is exactly like the one he gave one year • back. We \yant him to take a positive 1' decision in the matter and announce it to the world. So far as our Party is concerned, if a positive deciaon is sincerely taken, we will side with the Government and see that it is implemented. If there is drift. We can come only to one conclusion th'^t the Government is not interested in a solu'.ion and wants to keep this ma:-ter alive lil! the next elections. That impreiiiion should not be created. la should be dispelled. I would, therefore, • request the Home Minister to take a positive decision immediately and announce it to the world.

THE VtCE-CHAIRMAN (SHRl-MAT! MARGARET ALVA): The last speaker will be Mr. Gopalsamy.

SHRI SUSHIL CHAND MOHUNTA: Mad;im. 1 only want to quote one line of Thackeray.

THE VICE-CHAIRMAM (SHRIMATI MARGARET ALVA): There is no time now.

SHRI SUSHfL CHAND MOHUNTA: Thackeray said that '"if one is vagut, one never learns whether one is rich*. Or wrong. But if one is clear that one is 'vrong, at least one can correct oneself." This is what he said and so, at least now they should take a final decision.

THE VICE-CHAIRMAN ( SHRIMATI " MARGARET ALVA): Yes Mr. Gopal-samy. Please be brief.

SHRI V. GOPALSAMY: Madam, I am very fortunate *o get this chance to speak when, you are in the Chair, and T hope you v\ill be lenient enough to give me a couple of minutes.

Madam,, the people throuchout the length, and breadth of the coi'ntry are concerned about the Punjab situation and that is why I would like to make a speech on behalf of my party. Had Mr. Tohra, Mr. Tal-wandi and Mrs. Raiinder Kaiir been present in the House and come forward to put forth their points, of view, it wonid havg been meaningful and useful. But. for reasons, for political reasons, they have abstained. Most of the Members from the treaswry benches strongly condemned the Akali leaders and (he Akali movement as if they are raising the slogan of Khalistan here. Mr. Khushwant Singh ciearly stated that the Akali leaders are not for Khalistan. There are some extremists who raise the slogan of Khalistan and who operate from

abroad also. But we should not forget the fact that the leaders of the Akali Dal are no! irresponsible people. They are also responsible leaders and they are also patriots. Patriotism is not the monopoly of the Congress (l). If you find a si'.uation whichi is not suitable to you, is not convenient to yon, you immediately say that they are no: patriots and that they arc anti-nationals and so on and some of the Members jump from their seats on hearing the word 'nation'. What is wrong in it? I want to say that India is a multi-national State and I would like to reiterate my stand that India is a multi-national State. As if some sin has been committed, some of the Members ask as to how anybody can dare say that the Sikhs are a nation. Yes. Before the British came, there was no one India, but there were hundreds of kingdoms and hundreds of principalities and so this country consists of different religions, •different cultures, different civilizations, different languages and different nationalities. We should not forge', this fact. Can you ."tay that this is a thing '.'o be ignored when thousands and thousands of persons are joining the volunteer force and they have come forward to lay down even their lives to shed their blood? They have taken a VQW and they have joined the volunteer force of the Akali Dal. So, there is something. I am not for violence and I strongly condemn any act of violence. The leaders of the Akalj Dal have also condemned violence, the violent incidents, vyhich, took place. When the DIG. Mr. Atwal, was killed, they condemned it. I ^eel very sorry for the family of Mr. Atwal. They have been left in thg lurch and I "eel very sor'-y for the families of those constables who were killed when they were doing their duty. I would like to appeal to the Home Minister. He was the Chief Minister in Madhya Prad»shi a'so and he knows the si'.'uation and that was why fie had advised the Railways 10 cancel the trains. T really apprecia;e his attitude, his pa'ience and his exemplary understanding of the problem. But. some of the Members, in order to please the <3ovemment and in order to please the treasury benches, were mentioning about Abraham Lincoln and the Civil War and so many things. They said that we should stand like a rock. It is very easy Co stand *like* a rock. But the rock will be demolishetl and ruined, will be destroyed, by (he will of the people. It will be destroyed when lakhs and lakhs of volunteers of the Akali Dal are prepared for any sacrifice.

If you taik of the policy of "beat them* Or take up guns against them, that won't do good. You cannot succeed. Some of the Memlers from the Treasury Benches said tha"^ thsre was a movement in Mizoram, thare was a movemjnt in Naga-!and, and that ail these movements have gone. No. Then you are living in a foo.'s paradise. The entire northeastern region is ui '.urmoil. Da you mean to say 'hat you hav; solved the problem of .\ssara because you have been elected thouah the p;ople hav'e boycotted the polls yo'j have ^t a~ elected Government? But that Government does not represent the people of Assam. You have not solved the problem of Assam. You are sitting on a volcano. You have not solved (he problem of the north-eas.. Our Prime Minister is a very competent person, I agree. She was very compe'.ent to conduct the non-aligned nations' conference in an examplary manner. But this Government has failed to solve the problem of the north-east. You have not ' so far *M?.* msaus to volve the problem of Punjab. [ would 'ike to appeal to the leaders of the Akali Dal to come for the dialogue, to come to the negotiating table. I would like *'.0* appeal to tTijm. You should not corfjso the problem as if the demand is for Khalistan. There are religious demands. Sora= of the demands should bg conceded. Mr. Khushwant Singh made a request on the floor of fhis House. There are certain poli'ical deraandi; also as per '.be Anandpur Sah^b Resolution—more powers for the State, autonomy for the State. And you cannot simply say that there is •:he Sarkaria Commission and they will find out everything. You h:ive to look at this problem from that angle also, because that is why you lost Andhra Pradesh—not because of the cinema actor but because the people of the State were insulted. *(Time Bell rings).*

J, • .-/

THF VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI MARGARET ALVA): Don't merge the two now.

SHRI V. GOPALSAMY: Now, throughout the country, from Kashmir to Kanyakumari. Stales are clamouring for more powers. We have to manage them. Otherwise you cannot solve the pro'blem. Are you prepared to conced? the demands, political demands, of the Anandpur Saheb Resolution which are presed by the Akali movement. These are the demands for which they are fighting and they are agitating.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI MARGARET ALVA): Please conclude, Mr. Gopalsamj'.

SHRI V. GOPALSAMY; Eschew vioUmce: I appeal to both sides—leaders of the Akali Dal and also to the Government. Solve the problem in a peaceful manner. You may not be able to solve the problem within a week or within a month. But do not be carried away by some of the suggestions of the Members that you take ru;hless action. That will boomerang. TTiat is the writing on the wall. So I would request the leaders of the Akali movement to come to 'the negotiating table and find out ways and , means to ^olve the problem. Do not resort 1:0 policg and military action. This is my only request. And T am so grateful to you. Madam, for this opportunity. Thank vou.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI MARGARET ALVA); Hon. Home Minister.

SHRI AMARPROSAD CHAKRABORTY (West Bengal): Madam. Vice-Chairman. I also gave my name.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI MARGARET ALVA): No. *{Interruptions)*. I have called from each group. I cannot call everybody. *(Interruptions).*

SHRI AMARPROSAD CHAKRABORTY: There is one clarification I want to. . . . *(Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI MARGARET ALVA): Everybody wants to ask ehrifications. *(Interruptions), I* cannot go on calling everybody. Let the Minister reply. *(Interruptions) Don't* bs upset.

PROF. SOURENDRA BHATTA.CHAR_JEE (West Bengal): Only one....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI MARGARET ALVA): No, no.

SHRI AMARPROSAD CHAKRABORTY: I shall walk out,,if you do not allow me.

*[A; lliis stage, the hon. Member left the Chamber]*

**श्री शिव चन्द्र झा :** महोदया . . .

**उपसभाध्यक्ष (श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा):** आपका तो बिल्कुल ही अभी आया है, पार्टी के नाम से नहीं आग्ग है ।

**श्री शिव चन्द्र झा :** दो-दो मिनट दे दीजिए, जब इतना समय लगाया है आपने ।

**उपसभाध्यक्ष (श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा):** काल अटेंशन आना है, उसके बाद स्पेशल मेंशन है ।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI P. C. SETHI): Madam, during the last session also, I had placed before the hon. House a picture about the situation in Punjab. I have once more placed l'>efore the hon Members ihe view of ths Government today. There ij complete clarity. There is no question of any drift. We have reiterated that a^far as religious demands are concerned, they have been accepted. Now, Mr. Surjeet bas come out that all the seven committees have passed the resolution. We have contacted the committees and ':he respective State Governments. But we have not vet heard from them. Therefore, the decision is pending.

As far as the territorial and other demands are concerned, *i:* is true that if the 1970 Agreement is adhered to, then there 's no problem in handing over Chandigarh to Punjab. In that case, Abhor and Fazilka must go to Haryana. If that Award is no: acceptable, then we have offered that there should be two tribunals—one for the river water dispute between Ravi and Beas and the other for territorial matters. As far as thg river water ij concerned, I would like t"b make it very clear that in che river water dispute, we want to limit the dispute only between Haryana and Pimjab. Rajasthan has to be completely kept out. I am grateful that during the tripartite meeting, the opposition leaders were able to succeed in making -the Akalis agree that the Rajasthan supply of water shoTIlff bs kept aioof. We still stand by that position. We do not want to involve Rajas-|'.h?'\ in*o it.

As far as the question of peaceful solution is concerned, we are still readj for talks with the Akali Dal. We have never refused to italk. We are prepared to talk and we have already sent 'the invitation. I have again reiterated that ws are prepared to talk. I dc not agree with the hon. Member who. sPoke the last '.'hat India is a multi-national nation. India is a nation. It is multi-lingual and multi-cultural. But India is a nation and we have fought as a nation and we will continue to live as a nation. As far as the question of powers to the States is concerned, the sarkaria Commission has been appointed and it has been made clear that all these questions, even with regard to the change in the ConstitOtion, could tve referred to this Commission which will give its verdict on that. Therefore, these things are clear.

In the last few days, the Governmsn't of Punjab has taken some steps to improve the situation. The law and order arrangements have been strengthened. Nakabandis and police patrolling have been organised to prevent violent crimes. Intelligence machinery has been geared up and the police set-up has been reorganised. Ban on pillion riding on motor-cycles has been imposed in all the districts of Punjab. Restriction on carrying of fire-arms has been imposed. Ban on plying oT 3.5 and above horse power motor-cycles in affect-



ed areas has been iJnpciseti. A drive has been launched to unearth unhcensed arms and ammunition. The police officers have been asked to bring the known activists to book. Peace and communal harmony committees have been activated. Power? of judicial magistrates have been given to executive magistrates for speedy trial of cases against extremists and other elements. Jn the last few days, action has been taken against the extremists and some of the extremists have been arrested. Many clues ()f many crimes are hkely to come out of them. Therefore, we are for peaceful-solution of the Punjab problem. We do not want any confrontation. I have not accused anybody of that. I havg only jippealed to them that ;hey should not take vp the path of confrontation. They should come to the negotiating table, ami whatever demands have remained could be *iOT'e<i* ou'i by negotiations.

SHRI HARKISHAN SINGH SORIEET; What about a White Paper about the ac:ivities of the extremists?

SHRI P. C. SETHI: Everything is known to you.

SHRI NIRMAL CHATTERTEE (West Bengal): When are you going to implement the 1970 decision regarding Chandigarh and Fazilka and Abobor? *(Intprnp-tions).*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI MARGARET ALVA): I would like to make an announcement .... *(Interruptions)* that the Special Mentions which have been listed for today may be taken up tomorrow. The same list would hold good for tomorrow. Now, the Calling AlCention—Shri Ramanand Yadav. *{Interruptions,)* The House has not adjourn-*e^i* Please sit down. If the hon. Members have no objection, I would suggest that all the questions be raised a; the beginning and the Minister could finall) answer all the questions on the subject That would save a lot of time.

SHRI RAMANAND YADAV: Tha is good.